श्री विनय आर्य जी मंत्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

।। ओ३म् ।।

कृपया पृष्ठ संख्या 01 देखिए

आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/–
आजीवन : 1100/–
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९१,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-14 / अंक- 13 / आश्विन शु. 3 से कार्तिक कृ. 5 सं. २०७२ वि. 16-31 अक्टूबर 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 12 / मूल्य- 5/-

महाशय धर्मपाल एमडीएच वेद रिसर्च फाउंडेशन

कालीकट में निर्माण कार्य शुरू

केरल। कालीकट में 24 सितम्बर को एमडीएच के संस्थापक महाशय धर्मपाल जी द्वारा स्थापित वेद अनुसंधान फाउंडेशन का निर्माण कार्य का प्रारम्भ हो गया। ज्ञातव्य है कि गतवर्ष स्वतंत्रता संग्राम की पावन बेला में 15 अगस्त 2014 को यहां भव्य शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया था तथा इस अवसर पर 2008 कुण्डीय महायज्ञ भी अपनी मनोहर अविस्मर्णीय यादगार छोड़ गया था। निर्माण कार्य का शुभारम्भ कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के निदेशक आचार्य एम. आर. राजेश, एमडीएच परिवार से अनिल अरोड़ा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने संयुक्त रूप में दीप प्रज्ज्वलित करके किया। समारोह में आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री जोगेन्द्र खट्टर, इ. नरेन्द्र नारंग व कालीकट के विभिन्न गणमान्य व्यक्ति, वेद मंडल से महिलाएं एवं बच्चे शामिल हुए। यह अनुसंधान केन्द्र एक ऐतिहासिक धरोहर सिद्ध होगा तथा वैदिक सूर्य का प्रकाश फैलाएगा।

आर्ष गुरुकुल एवं गोशाला की रजत जयन्ती १६ से मथुरा में

मथुरा। आगरा- मथुरा मार्ग स्थित रैपुरा जाट से पिपरौट मेधपुर मार्ग पर स्थित आर्ष गुरुकुल एवं गोशाला, विजय नगर, दखौला के 25वां वर्ष पूर्ण होने पर 16, 17 व 18 अक्टूबर 2015 को रजत जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। साथ ही, गुरुकुल के संस्थापक एवं अधिष्ठाता स्मृति शेष स्वामी महानन्द जी के उत्तराधिकारी अधिष्ठाता स्वामी विश्वानन्द सरस्वती के जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भी भव्य आयोजन होगा।

इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रदूषण, व्यसनमुक्त समाज, अश्लीलता, कन्याभ्रूण हत्या, गोहत्या, धर्म के नाम पर पाखण्ड आदि गम्भीर विषयों पर विद्वानों के विचारों से जनसाधारण के जनजागरण हेतु कार्ययोजना तैयार कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के दिव्य स्वप्नों को साकार करने हेतु सार्थक प्रयास आरम्भ किये जाएंगे।

इस पावन अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री मायाप्रकाश त्यागी, स्वामी यतीश्वरानन्द (विधायक- हरिद्वार), स्वामी प्रणवानन्द, दिल्ली; स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आचार्य जयेन्द्र जी, नोएडा; राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करेंगे।

सिडनी में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

गूंजेगा वैदिक नाद

सिडनी (आस्ट्रेलिया)। नई दिल्ली, मॉरिशस, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड आदि में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों के आयोजन के क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 27, 28 नवम्बर 2015 को ऑस्ट्रेलिया के सिडनी महानगर में भव्य आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है जिसकी तैयारियां जोरों पर हैं।

इस महासम्मेलन में सहभागिता करने के इच्छुक आर्यजन यात्रा संयोजक सुरेश चन्द्र अग्रवाल (09824072509) से संबंधित सूचनाएं प्राप्त कर सकते हैं। सम्मेलनों के सूत्रों के अनुसार सिडनी में आर्य समाज के वैश्विक प्रचार–प्रसार की रणनीति पर विचार विमर्श होगा तथा मानव कल्याण के विभिन्न आयामों के साथ ही वैदिक संस्कृति के उन्नयन तथा विकास पर भी विशेष व्याख्यान होंगे।

इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के लिए 24 नवम्बर को दोपहर 1:15 बजे दिल्ली से हवाई यात्रा प्रारम्भ होगी तथा सिडनी से वापसी एक दिसम्बर को प्रातः 9:45 बजे होगी। महासम्मेलन को लेकर आर्यजनों में विशेष उत्साह है।

टंकारा चलो : ऋषि बोधोत्सव पर भव्य आयोजन

रामनाथ सहगल
टंकारा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मभूमि टंकारा में 6 से 8 मार्च 2016 तक शिवरात्रि के पावन पर्व पर परम्परागत ढंग से ऋषि बोधोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा।

यह जानकारी देते हुए श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के मंत्री रामनाथ सहगल ने आने वाले सभी अतिथियों से आग्रह किया है कि वे इन तिथियों में अपनी आर्यसमाजों तथा संस्थाओं का कोई भी कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाएं। सभी श्रद्धालुओं के आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था ट्रस्ट की ओर की जाएगी।

आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में रवाना होगा दल- आर्यावर्त केसरी के नेतृत्व में भी गतवर्षों की भांति आर्यों का विशाल जत्था इस वर्ष भी टंकारा रवाना होगा। 02 मार्च 2016 को यात्रा मुरादाबाद व अमरोहा से आला हज़रत एक्सप्रेस से रवाना होगी जो अहमदाबाद, पोरबन्दर, सोमनाथपुरी, द्वारिका, भेंट द्वारिका होते हुए 06 मार्च को टंकारा ऋषि जन्मभूमि पहुंचेगी। इस यात्रा के दौरान सभी श्रद्धालुजन अनेक ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों का भ्रमण करेंगे, जिनमें सावरमती आश्रम, अक्षरधाम मंदिर, महात्मा गांधी जन्म स्थल, गुरुकुल, सुदामा महल, नागेश्वर महादेव, भालका तीर्थ- जहां श्रीकृष्ण को तीर लगा था तथा सोमनाथ मंदिर आदि प्रमुख हैं।

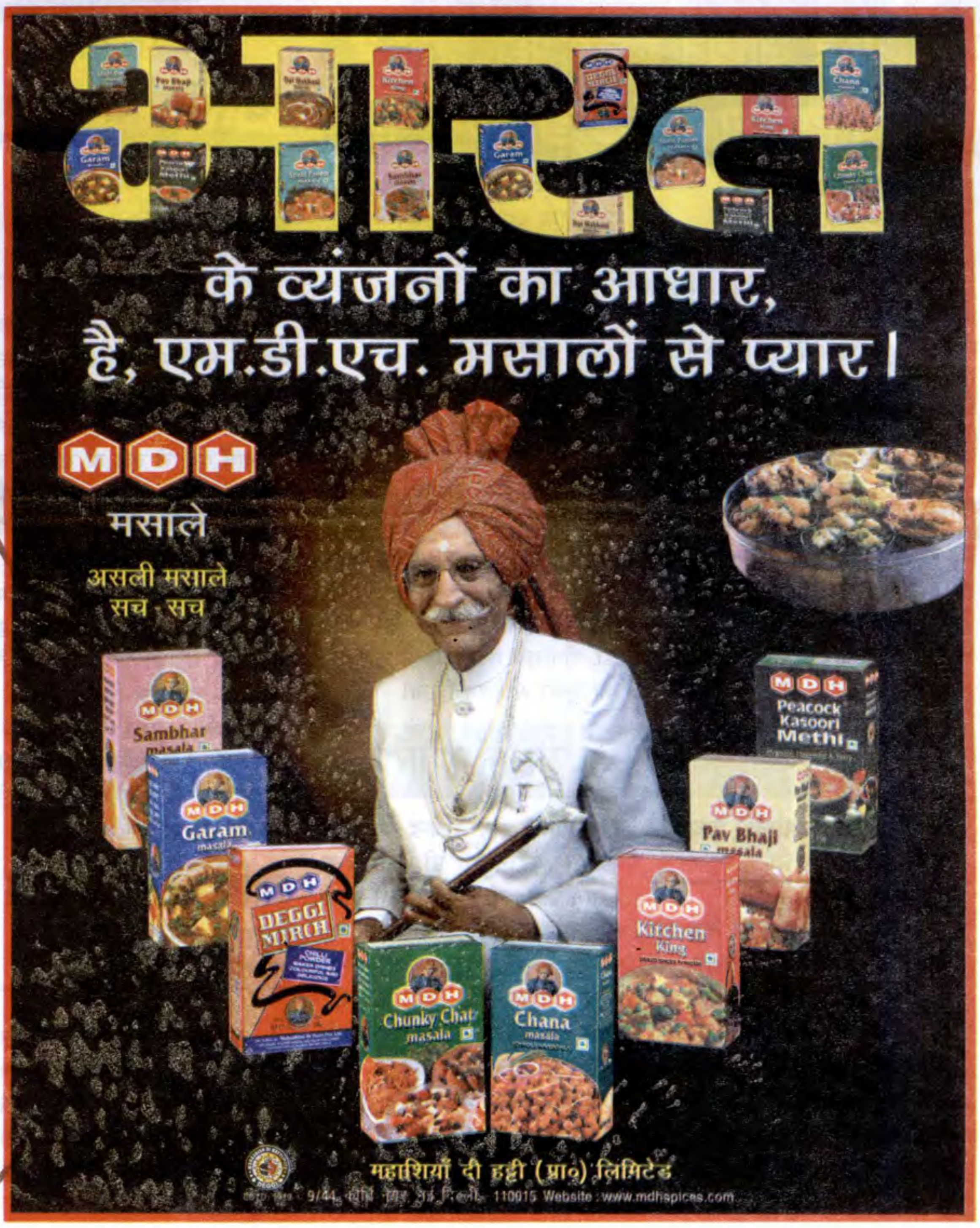

सामाजिक सुधार, रूढ़िवाद, अंधविश्वास को दूर करने वाला है आर्यसमाज : रामविलास

डॉ. देव आर्य
महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)।

आर्यसमाज महेन्द्रगढ़ के 53वें वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि रामविलास शर्मा (शिक्षामंत्री हरियाणा) ने आर्य पुस्तकालय की आधारशिला रखते हुए कहा नवजागरण सामाजिक सुधार, सांस्कृतिक पुनरुत्थान धर्म क्षेत्र में आडम्बर रहित आस्तिकता का प्रसार के साथ रूढ़िवाद अंधविश्वास को दूर करने वाले आर्यसमाज को मैं नमन करता हूँ।

इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के द्वारा यज्ञ के पश्चात् अपने उद्‌बोधन में कहा कि जो व्यक्ति यज्ञ करने के पश्चात् भी अपने जीवन को याज्ञिक नहीं बना पाता, समझो कि वह याज्ञिक नहीं। यज्ञ कर्म सभी कर्मों से श्रेष्ठ है अर्थात् संसार के श्रेष्ठ कार्य यज्ञ कहलाते हैं जो मानव को त्याग के क्षेत्र में ले जाते हैं।

पं. मदन मोहन आर्य संरक्षक आर्यवीर दल राजस्थान (गंगापुर सिटी) ने कहा कि स्वामी दयानन्द के जीवन काल में पांच आर्यसमाज हरियाणा में स्थापित हो चुकी थी। दादा बस्तीराम और पं. शम्भूनाथ ने गांव-गांव घूमकर आर्यसमाज का हरियाणा में प्रचार किया। आर्यसमाज की 1885 में स्थापना से पूर्व ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियो सोफिकल सोसाइटी जैसे सामाजिक संगठन थे। आज उनका नामोनिशान मिट गया, किन्तु आर्यसमाज खड़ा है जिसकी अन्य धार्मिक और सामाजिक संगठन से तुलना करना कठिन है। स्वामी दयानन्द को समझने के लिए आर्यसमाज के इतिहास के साथ मराठा, जाट इतिहास को भी पढ़ना पड़ेगा। हिन्दू समाज को वेद दी एक कर सकते हैं।

जगदीश प्रसाद सेवानिवृत्त प्रमुख वन संरक्षक ने कहा कि ब्रह्मचर्य ही जीवन है उसके महत्व पर बल दो। स्वामी दयानन्द ने दो सांडों को पकड़कर अलग कर दिया था। गणेश के स्वरूप की व्याख्या करते हुए कहा कि गणेश, जिस पर हाथी का सर लगा है, एक कार्टून है जिसका अर्थ वह हाथी के समान बलवान था। आर्य भजनोपदेशक पं. नरदेव ने कहा कि हिन्दुओं को इकट्ठा करना मैढकों को तराजू में तोलना है।

सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि ज्ञान का प्रकाश मानव के आन्तरिक जगत में होना चाहिए। मन को पवित्र करने के लिए सबसे पहले शुद्ध आहार व्यवहार की आवश्यकता होती है। रोगी होने पर कोई चिकित्सक नहीं कहता कि अण्डा, प्याज, लहसुन, आलू, मांस खाओ। वह कहता है कि फल, सब्जी खाओ, जो ऊँचें वृक्षों पर होते हैं तथा जिनमें आकाश तत्व अधिक होता है पृथ्वी तत्व कम होता है। श्राद्ध हम जीवित माता-पिता का करें। श्राद्ध श्रद्धा से बना है उनकी इच्छा पूर्ण करना तर्पण है। भगवान राम, कृष्ण को जन्म देने वाली माताओं के महत्व को हमने उन्हें अवतारी बताकर नष्ट कर दिया। जिस मार्ग पर तपस्वी चले उस मार्ग पर चलना हमारा कर्तव्य है। इस अवसर पर पं. रामनिवास आर्य (पानीपत) बहन उषा आर्य (रेवाड़ी) के साथ स्थानीय भजन मण्डलियों ने भजनों की प्रस्तुति की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में धर्म प्रेमी उपस्थित थे।

श्राद्ध जीवित पितरों का होता है मृतक का नहीं : डॉ. प्रियंवदा

सुमन कुमार वैदिक
लखनऊ (उ0प्र0)।

आर्यसमाज डालीगंज लखनऊ के शताब्दी समारोह में यज्ञ के पश्चात् अपने उद्‌बोधन में आर्य कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेद भारती ने कहा कि पंच महायज्ञों के सत्य स्वरूप क्या है इस पर विचार स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को प्रस्तुत किया। महर्षि दयानन्द ने कहा कि संध्याकाल दो है तीन नहीं। महर्षि ने हर क्षेत्र में क्रान्ति की। यज्ञों में हिंसा रूकवायी। उन्होंने कहा कि यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि के लिए किये जाते हैं तुम प्रदूषण कर रहे हो। वेद विदूषि ने कहा कि श्राद्ध और तर्पण पितृ यज्ञ में आता है। श्राद्ध जीवित पितरों का होता है मृतकों का नहीं। बढ़ते बच्चे शुक्ल पक्ष तथा वृद्ध कृष्ण पक्ष के समान होते हैं।

इस अवसर पर आर्यवेश (प्रधान सार्वदेशिक) डॉ. प्रशस्वमित्र, आनन्द कुमार प्रधान बंगाल उपप्रतिनिधि सभा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सहित अनेकों स्थानीय विद्वान उपस्थित थे। भजनों की प्रस्तुति तथा वेदपाठ कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों द्वारा की गयी। डॉ. दीनानाथ (अमेठी) ने कार्यक्रम का सुन्दर संयोजन किया।

२१ से होगा चतुर्वेद पारायण यज्ञ हरिद्वार में

सुमन कुमार वैदिक
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के शिष्य आचार्य अरविन्द शाहनी प्रतिवर्ष आठ चतुर्वेद पारायण कराते हैं। इसकी विशेषता रहती है कि एक ही स्थान पर चारों वेदों से एक ही साथ पांच यज्ञशालाओं पर यज्ञ किया जाता है जिसे सामुहिक रूप से एकत्र होकर यज्ञ करते हैं।

इसी क्रम में वैदिक मोहन आश्रम जहां कभी महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड खण्डनीय पताका फैराई थी। उसी स्थान पर यह यज्ञ किया जाता है, जो इस वर्ष 21 से 27 अक्टूबर तक किया जा रहा है। याज्ञिकों के निवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाती है।

३० से होगा गुरुकुल का दीक्षांत समारोह

डॉ० प्रियंवदा वेदभारती (प्राचार्या)
नजीबाबाद।

आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ नजीबाबाद का वार्षिकोत्सव 30 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक गुरुकुल प्रांगण में बड़े धूमधाम से मनाया जायेगा। इसमें योग सम्मेलन, आर्य संस्कृति सम्मेलन, भारतीय नारी की दशा दिशा सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। इस अवसर पर प्रोफेसर महावीर अग्रवाल (कुलपति), पं. राजेन्द्र जिज्ञासु, स्वामी वेदानन्द, प्रो. रामचन्द्र (सोनीपत), पं. मदन मोहन आर्य (गंगापुर सिटी), आचार्य वेद प्रकाश शास्त्री (गुरुकुल कांगड़ी), ठाकुर विक्रम सिंह (दिल्ली), प्रो. श्याम वेदालंकार, डॉ. जयदत्त उप्रेती (अलमोड़ा) सहित बाहर से आने वाले महानुभावों के निवास भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की तरफ से होगी। 30 अक्टूबर को कार्यक्रम के प्रथम दिवस दीक्षान्त समारोह होगा।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

चन्द्रभानु गुप्त
साहनपुर (बिजनौर) उ.प्र.

आर्यसमाज साहनपुर, तहसील नजीबाबाद का वार्षिकोत्सव कृष्ण पक्ष सप्तमी से नवमी तदनुसार 4 से 6 अक्टूबर को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में अनेक महानुभावों ने भाग लिया।

गो-प्रेमियों से विनम्र आग्रह

गुरुकुल आश्रम, आमसेना की गोशाला में किसी भयंकर बीमारी से

कई गाय व बछड़े मर गये। पशु-डॉक्टर चिकित्सा करते रहे, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। 3 घण्टे के अन्दर ही अच्छा दूध देने वाली ये 12 गायें काल के ग्रास में चली गयीं। इससे दूध की आय भी समाप्त हो गयी। लगभग 50 हजार रुपये इन गायों के चिकित्सा पर खर्च हुआ, इस प्रकार अचानक ही गुरुकुल पर यह वज्रपात हुआ। गुरुकुल की गौशाला गायों से खाली हो गयी। अतः गुरुकुल एवं गोप्रेमी सज्जनों से विनम्र आग्रह है कि इस आपत्तिकाल में गुरुकुल परिवार को सहयोग करें तथा गाय खरीदने में आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। आर्थिक सहयोग SBI खरियार रोड के गुरुकुल को दिये गये दान पर F,C,R,A,35Ac एवं 80G आयकर की छूट है।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
संचालक- गुरुकुल आश्रम, आमसेना (ओड़िसा)
फोन : 09437070615, 09937690889, 09238768031

वार्षिकोत्सवों, आर्य पर्वों तथा विभिन्न कार्यक्रमों में भजनोपदेश के लिए सम्पर्क करें

पं. घनश्याम प्रेमी आर्य
ग्राम- मुस्तफाबाद, पो०- जानसठ
जि०- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)- 251314
चलभाष : 09927728710

आवश्यकता है

आर्यावर्त केसरी को देश के कोने-कोने में संवाददाताओं एवं विज्ञापन प्रतिनिधियों की। पत्रकारिता व जनसम्पर्क में रुचि रखने वाले तुरन्त सम्पर्क करें। मानदेय योग्यता व कार्यक्षमतानुसार-
डॉ० अशोक कुमार आर्य, सम्पादक, फोन : 09412139333

आर्यावर्त प्रकाशन, अमरोहा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

- **रामायण का वास्तविक स्वरूप**, पृष्ठ-80, मूल्य-20/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-56, मूल्य-16/-
- **अर्चना यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-48, मूल्य-12/-
- **यज्ञ पद्धति**, पृष्ठ-120, मूल्य-35/-
- **बन्दा वैरागी** (कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-64, मूल्य-16/-
- **साधना 'प्रबन्ध काव्य'** (कवि रघुनाथप्रसाद साधक), पृ.-384, (सजिल्द), मूल्य-300/-
- **सत्यार्थ प्रकाश**, (महर्षि दयानन्द), पृ.-520 (सजिल्द), मूल्य-160/-
- **परिधियों के स्पर्श/यात्रा-यात्रा अन्तःयात्रा** (कवि प्रो. विजय कुलश्रेष्ठ), पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- **प्रो० विजय कुलश्रेष्ठ- हीरक जयंती ग्रंथ**, पृष्ठ-112, मूल्य-80/-
- **पं. प्रकाशवीर शास्त्री** (डॉ. अशोक कुमार आर्य), मूल्य- 5/-
- **तारा टूटा** (वीरेन्द्र कुमार राजपूत), पृष्ठ-52, मूल्य- 14/-
- **आर्य कन्या की सूझबूझ**, पृष्ठ-16, मूल्य- 5/-

: लघु पुस्तकें/ट्रैक्ट :

- **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्यसमाज का योगदान** मूल्य- 200/- सैकड़ा
- **यज्ञ और पर्यावरण**, 200/- सैंकड़ा
- **दयानन्द सप्तक**, मूल्य- 300/- सैंकड़ा
- **ब्रह्माराशि**, मूल्य- 400/- सैंकड़ा
- **सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें?** 100/- सैंकड़ा
- **क्रान्ति, (डॉ. आनन्द सुमन सिंह)** पृष्ठ-56, मूल्य- 20/-
- **आर्यसमाज की मान्यताएं** मूल्य- 8/-
- **अथ गोकरुणानिधिः** मूल्य- 8/-
- **आर्योद्देश्यरत्नमाला** पृ.-16, मूल्य- 8/-
- **वैदिक सिद्धान्त विमर्श** (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय) मूल्य- 25/-
- **सत्यार्थप्रकाश दर्शन** (महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश विषयक महत्वपूर्ण आलेखों का संग्रह), मूल्य- 100/-

■ **कृपया अपना आदेश भेजकर पुस्तकें मंगाएं।**

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में आर्यसमाज

(हिमाचल प्रदेश के नवनियुक्त राज्यपाल आचार्य डॉ० देवव्रत जी के सन्दर्भ में)

डॉ० उदयन आर्य, प्राचार्य

मैं 8 अगस्त को रात्रि के 9 बजे चण्डीगढ़ की सुन्दर गलियों में घूम रहा था कि अकस्मात् मुझे मेरे दोस्त सुरेन्द्र का फोन आया कि राज्यपाल के रूप में डॉ0 देवव्रत जी की नियुक्ति हो रही है। इस प्रकार की चर्चा है। आप पता करो कि सच्चाई क्या है। मैंने यह सुनकर मन ही मन ये भाव व्यक्त किया कि यह सही सूचना हो। उसी समय मैंने तुरन्त डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार जी को फोन किया, तो उन्होंने फोन उठाते ही मुझे बधाई दी और कहा कि डॉ0 वेदव्रत जी राज्यपाल के रूप में नियुक्त हुए हैं। डॉ0 राजेन्द्र जी बहुत व्यस्त थे, इसलिए और अधिक बातचीत नहीं हुई। मैंने उस समय बहुत ही बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की, और लगभग 50 आर्यसमाज के लोगों को तत्क्षण सूचना दी। क्योंकि खुशी को प्रकट करने का सबसे महत्वपूर्ण तरीका यही है कि उसकी खुशी, उसकी सूचना अपनों को दी जाए। और लगभग उन सभी आर्यसमाज के लोगों को भी डॉ0 देवव्रत जी के राज्यपाल रूप में बहुत अधिक खुशी हो रही थी। क्योंकि इस बात को हम और आप लोग जानते हैं कि इतने बड़े पद पर किसी कट्टर आर्यसमाजी व्यक्ति को अवसर लम्बे समय के बाद मिला है। यह पल हमारे लिए गौरव का पल है, आर्यसमाज के व्यक्ति को पद मिलना वास्तव में बड़ी बात है। जब से इस देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बने हैं, तब से संघ के नेतृत्व में कमी आयी है। यदि विगत मोदी के कार्यकाल को देखा जाए, तो शायद कट्टर संघ की विचारधारा वाले व्यक्तियों की संख्या कम है। आर्य समाज और संघ में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। परन्तु संघ वाले पता नहीं क्यों, अपने आप को दयानन्द से विशेष दूर रखते हैं। आर्य समाज के मंच से तो विवेकानन्द का नाम तो सुनने को मिलता है और मिलना भी चाहिए, क्योंकि तत्कालीन समय में विवेकानन्द ने भी विदेशों में जाकर भारत की ध्वजा लहराई थी, परन्तु हमारा दयानन्द तो विवेकानन्द से बढ़कर है। जिस आर्यसमाज और दयानन्द के बिना शिक्षा और स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास नहीं लिखा जा सकता, उस संस्था का संघ द्वारा नकारना कहां तक उचित है। अस्तु। मेरा तात्पर्य डॉ0 देवव्रत जी को राज्यपाल बनाये जाने के विचार से है। मैं वापस 10 तारीख को गुरुकुल आया और आते ही विशेष पत्रकार वार्ता का आयोजन किया। प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद पत्र लिखा। सोशल मीडिया द्वारा भी विशेष प्रचार-प्रसार किया गया। न केवल मैंने किया, अपितु अन्य आर्य समाजों को भी पत्रकार वार्ता करने का बड़े-बड़े बैनर लगाने का, धन्यवाद पत्र लिखने का भी निर्देश व

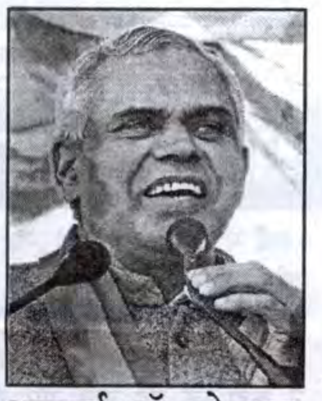

आचार्य डॉ० देवव्रत
महामहिम राज्यपाल

निवेदन किया। क्योंकि अगर इस समय का आर्यसमाज लाभ नहीं उठा पाया, तो हमें केवल निराशा ही हाथ लगेगी। क्योंकि इस प्रकार के कार्य करने से सरकार तक उस व्यक्ति के समर्थन में कितने लोग हैं और उस समुदाय की कितनी संख्या है इत्यादि विषयों की जानकारी सरकार तक पहुंचती है, जिससे उस समाज को लाभ मिलता है।

जितनी जिस व्यक्ति के समर्थन में प्रतिक्रिया होगी, उतना ही सर्वकार से लाभ मिलेगा। क्योंकि बात सारी वोटों (संख्या) की है। परन्तु बड़े दुखी मन से कहना पड़ रहा है कि डॉ0 देवव्रत के समर्थन में प्रतिक्रिया बहुत कम रही। खुश सब लोग हैं, परन्तु उसके ऊपर थोड़ा सा परिश्रम करने को हम तैयार नहीं हैं। मैंने पानीपत, चण्डीगढ़, पंजाब लगभग सभी राज्यों का दौरा किया। हां कुछ हद तक सोशल मीडिया पर जरूर लोगों ने प्रतिक्रिया दी। परन्तु ये पर्याप्त नहीं है। आचार्य देवव्रत जी से किसी के व्यक्तिगत मनोभेद, मतभेद हो सकते हैं, परन्तु आर्यसमाज और दयानन्द से नहीं। और डॉ0 देवव्रत जी आर्यसमाज के पुरोधा एवं नेता हैं। और यह उपलब्धि आर्य समाज की है। हमारे पास डॉ0 राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ0 धर्मवीर (परोपकारिणी सभा, अजमेर) जैसे प्रबुद्ध विद्वानों की भरमार है, और ये वे लोग हैं, जो हर क्षेत्र में हर विषय में किसी को टक्कर देने के लिए तैयार रहते हैं। मैं तो चाहता हूं कि भाजपा में एक गुट आर्यसमाज का हो जाए। जैसे स्वामी सुमेधानन्द जी, सत्यपाल जी, कैप्टन अभिमन्यु आदि का एक बड़ा समूह आर्यसमाज का भाजपा में बन सकता है, और यह एक शुरुआत है। यदि आर्य समाज कोई नई राजनीतिक पार्टी शुरु करता है, तो शायद सफलता पाना किंचित दुष्कर है। परन्तु इस प्रकार के अवसरों का लाभ उठाकर अपनी संख्या व ताकत सरकार को दिखाकर आर्यसमाज का नेतृत्व भाजपा में बढ़ सकता है। मेरा तात्पर्य यही है कि शीघ्र ही डॉ0 देवव्रत जी के समर्थन में नगरों में बैनर, पत्रकार वार्ता, सरकार को आभार पत्र आदि अनेक माध्यमों से आर्य समाज की संख्या व ताकत का अहसास सरकार को कराएं। यह आर्य समाज की शुरुआत है। आशय को ही समझें, अन्यथा अर्थ न निकालें, क्योंकि अब आर्य समाज का परिवर्तन का समय आ चुका है। हम लोगों के परिश्रम से ही आर्य समाज और दयानन्द का प्रचार होगा। आओ संगठन सूक्त के आदेश का पालन करते हुए मिलकर आर्यत्व का प्रचार करें। अतः हम अपनी राजनीति में भूमिका निभाएं, क्योंकि यह एक अच्छा विकल्प है। जयतु संस्कृतं, जयतु दयानन्दः, जयतु भारतम्।

-श्री गुरु विरजानन्द महाविद्यालय, गुरुकुल करतारपुर, जालन्धर मो0 : 09888764311

संक्षिप्त समाचार

प्रदान किये अवार्ड

फरीदाबाद (हरियाणा)। महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, नेहरू ग्राउण्ड द्वारा विद्यार्थी अवार्ड दिवस का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर आचार्य स्वामी बलदेव जी, तथा आचार्य विजयपाल जी द्वारा 'के0एल0 मेहता स्वर्ण पदक' एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गये। यह कार्यक्रम महात्मा कन्हैयालाल महता सभागार, के0एल0 मेहता दयानन्द महिला महाविद्यालय में सम्पन्न हुआ।

बिस्मिल की जयन्ती मनाई

रुड़की (हरिद्वार)। देशहित पर बलिदान होने वाले अमर शहीद पं0 रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म दिवस आर्य समाज में प्रतिवर्ष बड़े ही उत्साह से मनाया जाता है। इस वर्ष भी उनके आजादी विषयक उठाये गये कदमों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया, जिससे उपस्थित जनसमूह भाव विभोर हो गया। इस अवसर पर आयोजित स्वास्तिक महायज्ञ के यजमान तेजपाल सिंह आर्य रहे, तथा ब्रह्मा मदनपाल शर्मा ने विधि-विधान से यज्ञ अनुष्ठान कराया।

सामवेद पारायण यज्ञ

मुरादाबाद। गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार मण्डल मुरादाबाद द्वारा वेदप्रचार एवं यज्ञ की श्रृंखला में सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन 3 से 6 अक्टूबर तक गुलजारीमल धर्मशाला में किया गया।

शिक्षार्थियों द्वारा यज्ञ

समस्तीपुर (बिहार)। आर्य समाज, समस्तीपुर एवं महर्षि दयानन्द आदर्श वैदिक (एमडीएवी) गुरुकुल एवं उपदेशक विद्यालय समस्तीपुर में आचार्य ज्ञानेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देशधर्म पर बलिदान होने वाले अमर शहीदों को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

विद्यालय में उपदेशिका की शिक्षा ग्रहण कर रही रीना आर्या द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया। ब्रह्मचारी प्रभात, आनन्द, नीतीश, अविनाश रौनक द्वारा मंत्रोच्चारण किया गया। शास्त्री जी ने बताया कि फांसी के समय भी बिस्मिल ने विधि-विधान से यज्ञ किया। उल्लेखनीय है कि जेल में उनका वजन 3 किलो बढ़ गया था।

वेदकथा सम्पन्न

शाहजहांपुर। आर्य समाज टाउनहाल में वेदकथा का आयोजन किया गया, जिसमें पं0 नेमप्रकाश आर्य, आचार्य रामबहादुर, आचार्य ज्ञानेन्द्र शास्त्री, आचार्य अरुण, पं0 महिपाल सिंह आर्य 'क्रान्तिकारी' भजनोपदेशक द्वारा प्रवचन हुए। वेदों की महत्ता के साथ ही श्रीकृष्ण व रामचन्द्र के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

धर्म मुक्ति का मार्ग है : डॉ० अशोक

उदयपुर (रामदयाल)। आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य में सत्संग का भव्य आयोजन किया गया। अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ0 अशोक आर्य ने की। पं0 रामदयाल के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ संपन्न हुआ। मंत्री ललिता मेहरा ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया तथा प्रधान भंवरलाल आर्य ने सभी का आभार जताया।

सम्बोधित करते डॉ० अशोक आर्य (मण्डी डबवाली) - केसरी।

आर्य समाजों के निर्वाचन समाचार

बीसलपुर (पीलीभीत) उ0प्र0

प्रधान- राजेन्द्र प्रसाद मिश्र

मंत्री- भूपराम आर्य

कोषाध्यक्ष- मोहन स्वरूप गंगवार

नकुड़ (सहारनपुर) उ0प्र0

प्रधान-अभय सिंह सैनी एडवोकेट

मंत्री- भूपेन्द्र कुमार गोयलक

कोषाध्यक्ष- हरिदत्त आर्य

परशुरामपुरी-जलालाबाद शाहजहांपुर (उ0प्र)

प्रधान-आशादेवी आर्या

मंत्री- प्रमोद कुमार आर्य

कोषाध्यक्ष- विक्रान्त कुमार वैदिक

उत्सव सम्पन्न

बहादुरगढ (हरियाणा)। आत्मशुद्धि आश्रम का 49वां वार्षिकोत्सव 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक समारोह पूर्वक मनाया गया, जिसमें अथर्ववेदीय यज्ञ एवं नि:शुल्क ध्यान योग का शिविर भी लगाया गया। उत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा व योगनिर्देशक डॉ0 स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (हरिद्वार), मुख्य अतिथि स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (सांसद राजस्थान) रहे। वेदपाठ कन्या गुरुकुल कालवां की छात्राओं ने किया।

पितृयज्ञ के अंग हैं श्राद्ध और तर्पण

सुमनकुमार वैदिक
नई दिल्ली।

आर्य समाज कीर्तिनगर में अथर्ववेदीय यज्ञ डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती, आचार्या गुरुकुल नजीबाबाद के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि भगवान श्री कृष्ण नित्य यज्ञ करते थे। वे षोडश कलाओं को जानते थे। हम उनके योगमय जीवन पर विचार कर उससे शिक्षा ग्रहण करें। इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम भी सच्चे अर्थों में आर्य थे, उन्होंने मर्यादाओं को स्थापित किया। वे भी नित्य हवन करते थे।

अपने प्रवचनों में आचार्या जी ने कहा कि वेद ज्ञान और मानव जीवन का सदैव संबन्ध रहा है। आधुनिक शिक्षा में वैदिक आदर्शों के अभाव से राष्ट्र की नयी पीढ़ी को सार्थक दिशा और दायित्वबोध नहीं हो रहा है।

आचार्या जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रद्धा से श्राद्ध तथा तृप्ति से तर्पण बनता है, जो पितृयज्ञ के अंग हैं, ये दानों जीवित पितरों के लिए होते हैं, क्योंकि आज भी श्राद्ध तीन पीढ़ी- पिता, दादा, पड़दादा का किया जाता है, जिन्हें व्यक्ति अपने जीवनकाल में देखता है। श्राद्ध और तर्पण पर विचार से पूर्व गुरुकुल की ब्रह्मचारियों ने सुमधुर गीत 'हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं' गाया।

इस अवसर पर प्रभात फेरियां निकाली गयीं, तथा परिवारों और पार्कों में यज्ञों का समारोहपूर्वक आयोजन किया गया।

दयानन्द के विचारों को अपनाने का संकल्प

प्रज्ञा आर्या
आगरा।

आर्य समाज वीर सावरकर नगर, जयपुर हाउस का 38वां वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य संजीवरूप के ब्रह्मत्व में सैकड़ों यजमानों ने यज्ञ किया और महर्षि दयानन्द के विचारों को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया।

प्रसिद्ध विद्वान अर्जुनदेव स्नातक, प्रो. उमेश कुलश्रेष्ठ, यशपाल आर्य, राजकुमारी आर्य व पुरोहित आचार्य वेदप्रकाश के भी व्याख्यान हुए।

आचार्य संजीवरूप ने त्रेतवाद का समर्थन करते हुए कहा कि ईश्वर, जीवात्मा, व प्रकृति तीन अनादि सत्ताएं हैं। प्रकृति कार्यरूप प्रकृति का, सृष्टि का उपादान कारण है। जीवात्मा अल्पज्ञ है, वह प्रकृति के सूक्ष्म परमाणुओं को नहीं पकड़ सकता। अत: केवल ईश्वर ही सृष्टि का नैमित्तिक कारण है। प्रकृति व जीवात्मा से सूक्ष्म व सर्वज्ञ होने के कारण वह दोनों का स्वामी है। जीवात्मा के कल्याण हेतु ही परमात्मा सृष्टि की रचना करता है। जीवात्मा परमात्मा का अंश कदापि नहीं हो सकता।

इस अवसर पर प्रत्येक सभा में श्रोताओं को लाटरी सिस्टम से पुरस्कार बांटे गए।

भजनसिंह शक, उदयवीर आर्य, व मुकेश आर्य ने भजन सुनाए। सभा में डा. सुभाष आर्य, डा. श्रीराम वर्मा, अश्वनी डेम्बला, कुलदीप कृष्ण महाजन, करुणा आर्य, रितु आर्य, पुष्पा सक्सेना, आनंद कपूर, अशोक वर्मा आदि मौजूद रहे। अन्त में प्रधान तथा मंत्री द्वारा सभी उपस्थित महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
प्रेरणादायी गतिविधियां

आर्यसमाज, कीर्तिनगर में वर्ष में दो विशाल आयोजन किये जाते हैं- श्रावणी उपाकर्म एवं शिवरात्रि पर। इस अवसर पर चार दिनों की प्रभात फेरी होती है, जो प्रात: 5.30 बजे आर्य समाज से प्रारम्भ होकर कीर्तिनगर के अलग-अलग ब्लाकों में घूमती हुई किसी निश्चित आर्य परिवार के निवास पर समाप्त होती है, जहां सभी के जलपान की व्यवस्था होती है। इस बार यह प्रभात फेरी 3 से 6 सितम्बर तक आयोजित की गयी, तथा जलपान व्यवस्था सुषमा सेठ, ओमप्रकाश, विद्यासागर चड्ढा एवं कृष्णमोहन टक्कर परिवार द्वारा की गयी।

यहां की मुख्य गतिविधियों के विषय में ऋषिपाल शास्त्री (धर्माचार्य) बताते हैं कि रविवार तथा मंगलवार को सत्संग होता है। गतिविधियों में दैनिक यज्ञ दोनों समय, आर्यवीर दल की शाखा, व्यायामशाला, महिला योग कक्ष, वाचनालय के साथ संस्कार सहयोग सेवाएं भी दी जाती हैं। आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय में होम्योपैथिक, एलोपैथिक, महिलाओं की चिकित्सा, फिजियोथेरेपी क्लीनिकल लेबोरेटरी तथा नेत्र और दन्त चिकित्सा के साथ ही स्त्री रोग, हृदय रोग, हड्डी, नेत्र, एक्यूप्रेशर, रीढ़ व नाड़ी तंत्र विशेषज्ञों की सेवाएं निशुल्क दी जाती हैं। नेत्र शिविर भी आयोजित किये जाते हैं। आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग पार्कों में आयोजित होते हैं। वर्तमान में आर्यसमाज के प्रधान ओमप्रकाश आर्य हैं, तथा सतीश चड्ढा- मंत्री व सुरेश तेजी- कोषाध्यक्ष हैं। महिला आर्यसमाज की प्रधाना- सुषमा सेठ तथा गीता शर्मा- मंत्राणी, और कविता आर्या- कोषाध्यक्ष हैं। **प्रस्तुति : सुमनकुमार वैदिक**

आर्यसमाज का निर्वाचन : श्रीचन्द गुप्ता प्रधान तथा रघुराज सिंह बने मंत्री

कोटा। आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा के वर्ष 2015-16 का वार्षिक चुनाव ओमप्रकाश तापड़िया एवं जे.एस. दुबे चुनाव अधिकारी एवं पर्यवेक्षक अर्जुन देव चड्ढा (जिला प्रधान) की उपस्थिति में सम्पन्न हुए। सभी पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए। इस अवसर पर प्रधान-श्रीचंद गुप्ता, मंत्री- रघुराज सिंह कर्णावत, तथा कोषाध्यक्ष-शिवदयाल गुप्ता के साथ ही अन्य पदाधिकारी भी चुने गये।

श्रीचन्द गुप्ता

रघुराज सिंह

शिवदयाल गुप्ता

आओ हम सब बचाएं पानी

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा'

पानी सफेद सोना है और यह अमृत से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। पानी पर ही जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, कीट-पंतगों आदि का जीवन निर्भर है। संयुक्त राष्ट्र (यू एन) ने कहा है कि अगर जरूरी कदम नहीं उठाए गए तो वर्ष 2030 तक दुनिया में पानी के लिए हाहाकार मच सकता है। उस समय तक करीब आधी आबादी के पास अपनी जरूरतों के लिए साफ पानी नहीं होगा। यूएन ने अपनी वार्षिक वर्ल्ड वाटर डिबलेपमेंट रिपोर्ट में कहा है कि अगले डेढ़ दशकों में साफ पानी की उपलब्धता 40 फीसदी तक कम हो सकती है।

जल प्रबंधन में गड़बड़ी के कारण 2030 तक दुनिया के सबसे ज्यादा गर्म देश पानी के संकट का सामना करेंगे। जिनमें एक भारत भी है। हम सबको इस रिपोर्ट को खतरे की घंटी मानकर संभल जाना चाहिए, वर्ना हमारा यह सफेद सोना, अमृत से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण जल कहीं खो जायेगा तब सम्पूर्ण जगत का जीना मुश्किल हो जायेगा। हमारे देश की हालत यह है कि तमाम नदी-तालाब सूखते जा रहे हैं। जो बचे हैं उनका प्रदूषण स्तर बढ़ता जा रहा है। करोड़ों रूपये फूंकने के बावजूद गंगा-जमुना जैसी नदियों की साफ़ सफाई नहीं हो पा रही है। अपने ताल-तलैयों को हरा-भरा रखने की कोई कोशिश तक हम नहीं कर पा रहे है और हमारा हर काम भूगर्भीय जल पर निर्भर है। अब गावों में भी समर सेबिल पम्प लग गए है। और पानी की बर्वादी बुलेट ट्रेन की रफ्तार से हो रही है। यही कारण है कि लगभग हर जगह वॉटर लेवल बड़ी तेजी से नीचे जा रहा है। देश में सिंचाई कार्यों के लिए 75 प्रतिशत पानी भूमिगत जल स्त्रोतों से ही प्राप्त होता है। घरेलु कार्यों के लिए भी 90 प्रतिशत पानी भूमिगत स्त्रोतों से ही इस्तेमाल किया जाता है।

जल संकट वर्तमान और भविष्य की सबसे बड़ी समस्या है। लोगों को हर हाल में यह समझना होगा कि पानी एक कीमती चीज है और इसका विवेकपूर्ण इस्तेमाल जरूरी है। जल संरक्षण के अन्य उपायों को भी सरकार बढ़ावा दे व हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि पानी बचाने के लिए एक सामाजिक आंदोलन चलाएं। सब मिलकर पानी बचाएं।।

ग्राम-रिहावली, डाक-तारौली गूजर,
फतेहाबाद (आगरा) उ.प्र.-283111
मो. : 9627912535

गऊ की महत्ता जानने के लिए आर्यावर्त प्रकाशन, अमराहा द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'अथ गोकरुणानिधि' अवश्य पढ़ें

सैकड़ों की संख्या में बांटने पर विशेष छूट। आर्यावर्त प्रकाशन, सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ०प्र०) आज ही मंगाएं यह बहुमूल्य और उपयोगी लघु पुस्तक।

वैचारिक प्रवाह

कृष्णमोहन गोयल, अमरोहा

महामहिम भी बोलें हिन्दी

10 सितम्बर को भोपाल में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण विश्व से हिन्दी के उपासकों ने इस दिवस में अपनी भगीदारी की। केवल इतना ही नहीं वरन् चीन से भी अनेक तकनीकी विशेषज्ञों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। यह हिन्दी के लिए गर्व का विषय है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विगत वर्ष में अपने समस्त विदेशी दौरों में भी अधिकांशतः हिन्दी में सम्बोधन कर एक नई पहल की। बधाई। परन्तु खेद है कि देश के प्रथम नागरिक अंग्रेजी भाषा को ही अपनाए हुए हैं। समस्त राष्ट्रीय कार्यक्रमों में वह केवल अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते है। ऐसा विरोधाभास क्यों? देशवासियों की भावनाओं का महामहिम कब आदर कर पाएंगे।?

रोकिए गायों की तस्करी

हमारे शास्त्रों में गाय को माता का दर्जा दिया गया है। किंतु खेद का विषय है कि वर्तमान में कुछ राजनीतिज्ञों और मांस का सेवन करने वाले बहुत से लोगों द्वारा गाय के मांससेवन को लेकर तमाशा किया जा रहा है। कुछ गोमांस के सेवन को वैध ठहराने की निकम्मी कोशिश कर रहे हैं, जो शर्मनाक है। तुरन्त गायों की तस्करी और गोवध को रोकने की आवश्यकता है। बांग्लादेश को भारतीय सीमा से प्रतिदिन हजारों गायों की तस्करी होती थी, परन्तु केन्द्रीय गृहमंत्री के प्रयासों से वह तस्करी बन्द हो गयी, जसके लिए राजनाथ सिंह बधाई के पात्र हैं।

बिहार- बंगाल में गौभक्तों को अब अपनी गायों की रक्षा के लिए ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत नहीं, क्योंकि अब इन क्षेत्रों में गायों के तस्कार समाप्त हो गये। यह प्रसन्नता गृहमंत्री के छोटे से प्रयास से गोतस्करी पर विराम लग गया। बिहार और बंगाल क्षेत्रों के जो अबतक केन्द्र और प्रदेश सरकारों से मांग रहे हैं कि गौवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए, जिससे गोवंश में वृद्धि हो सके।

02 अक्टूबर, 2015

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जयंती के अवसर पर प्रदेशवासियों का

शत्-शत् नमन

श्री अखिलेश यादव
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

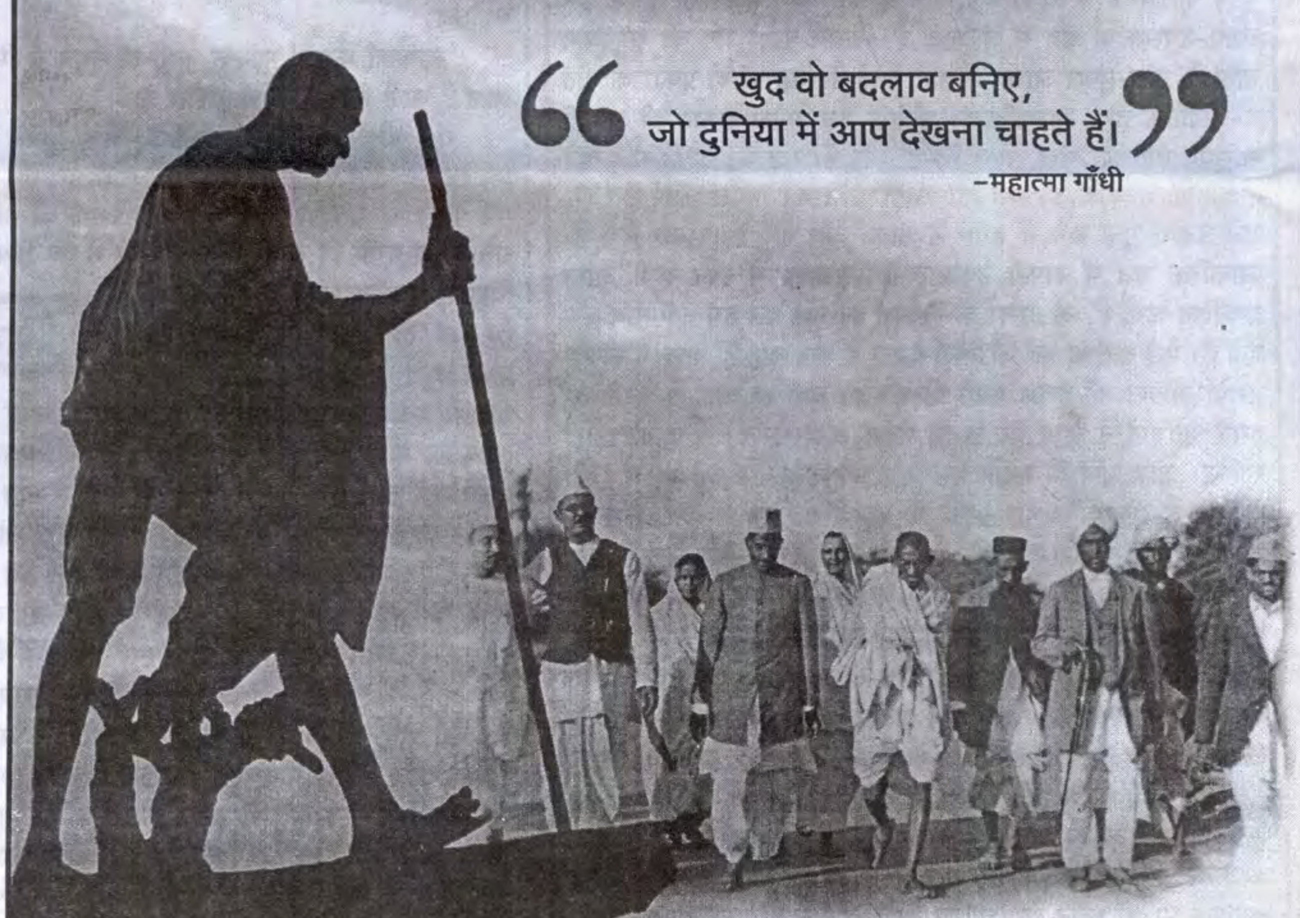

बन रहा है आज, सँवर रहा है कल twitter.com/cmofficeup facebook.com/cmouttarpradesh youtube.com/user/upgovtofficial upnews360.in
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
http://information.up.nic.in

आध्यात्मिक साधना और यज्ञ

हम साधना करने की इच्छा रखते हैं, किंतु जब साधना के लिए एकान्त में बैठते हैं, तो मन में हमारे द्वारा किये गये कर्मों के चित्र समीप आने लगते हैं। ये अशुद्ध चित्र हमारे समीप क्यों आते हैं, सबसे पहले यह जानना आवश्यक है। साधना तब सिद्ध होती है, जब इन चित्रों में प्रभु की प्रतिभा दृष्टिपात होने लगती है। संसार की मोह-ममता साधना से विचलित कर आवागमन के चक्र से छूटने नहीं देती, और आगे ऐसी योनियों में पहुंचा देती है, जिनके जीवन में कभी प्रकाश नहीं होता। जिस मार्ग पर तपस्वी चलते हैं, उसे अपनाना हमारा परम कर्तव्य है। उसमें हमें भ्रमित नहीं होना चाहिए। साधक भौतिकवाद को आध्यात्मवाद पर न्योछावर कर देते हैं।

साधना में जाने तथा मानवत्व को ऊंचा बनाने के लिए ऋषियों ने यौगिकता का आश्रय लिया था। प्रत्येक के हृदय में यह आकांक्षा रहती है कि मेरा अन्तरात्मा ऊर्ध्व गति वाला हो, क्योंकि वस्तु का विच्छेद होता है, उससे मिलने की आकांक्षा सभी की रहती है। हमारे भी प्राणों का विच्छेद हुआ है। इसको पुनः जोड़ने की इच्छा रहती है। सभी अपनी प्रवृत्तियों को एक सूत्र में पिरोना चाहते हैं। इसके अभाव में साधना सफल नहीं होती। इसीलिए ऋषियों ने अनुशासन को योग का एक आवश्यक अंग माना है। रात्रि और दिवस के मिलन को सन्ध्याकाल कहते हैं। हमारे ऋषि-मुनि संध्याकाल में अपनी नाना प्रकार की गुत्थियां सुलझाते थे। बिखरी प्रवृत्तियों को एक सूत्र में लाने वाला आत्मयाग के लिए तत्पर होता है। जब तक जीवन व्यापकवाद में परिणत नहीं होता, मानव साधना में सफल नहीं होता।

जब प्राण का विभाजन हो गया मन के द्वारा, तो उसमें पुनः सन्धि करने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। उसी का नाम संध्या है। दो वस्तुओं के मिलान को संध्या अथवा संधि कहते हैं। साधना के लिए तत्पर साधक को सर्वप्रथम अपने को जानने की, अपनी इन्द्रियों, तथा आन्तरिक भावनाओं को ऊंचा बनाने की इच्छा रहती है। वह ब्रह्माण्ड को अब व्यापक रूप में देखने लगता है। जब तक हमारे जीवन में व्यापकवाद नहीं आएगा, हम साधना में सफल नहीं होंगे। साधक अपने अन्द्रियों के विषय को बाह्य जगत में प्रवेश कराकर आन्तरिक जगत में अर्थात् अपने शरीर में ही इस ब्रह्माण्ड को देखने लगता है। जो नेत्र दूर की वस्तु देखते थे, अब अन्तर्हृदय में देखने लगते हैं। बाहर का जगत अपने अन्दर दिखने लगता है। प्रभु की महिमा, उसकी अनुपमता को साधक बाहर नहीं, अब अपने अन्दर देखने लगता है। आध्यात्मवाद सन्धि को कहते हैं। भौतिकवाद विभक्त क्रिया को कहते हैं। भौतिकवाद से मानव को जीवन प्राप्त नहीं होता, विकृतता प्राप्त होती है। जितना मानव विभाजन करता रहता है, जानकारी करता है, स्वार्थ में लगा रहता है, उतना ही आध्यात्मवाद से दूर चला जाता है।

जो यज्ञ करते हैं, किंतु अपने जीवन को यज्ञमय नहीं बनाते, तो वे न याज्ञिक हैं न साधक। यज्ञकर्म श्रेष्ठतम कर्म कहलाता है, जो हमें त्याग-तपस्या के क्षेत्र में ले जाता है, जिसमें हमारे धन का सदुपयोग होता है, तथा सुन्दर आचार-विचार बनते हैं। यज्ञ भी दो प्रकार के होते हैं- भौतिक तथा आध्यात्मिक। भौतिक यज्ञ अनेक प्रकार की सामग्री समिधा, घृत और जल लेकर किया जाता है। यज्ञ की अग्नि में इनकी आहुतियां दी जाती हैं। यज्ञ की अग्नि सभी को निगल जाती है, और उसे हजारों गुना रूप में हमारे देवताओं और हमें प्रदान कर देती है। आन्तरिक यज्ञ में अपनी हृदय रूपी यज्ञशाला में ज्ञान रूपी अग्नि प्रज्वलित करते हैं, जो अन्दर के विकारों को नष्ट कर हमें अग्निमय बना देती है। ऐसे याज्ञिक को जो स्पर्श करता है, वह नष्ट हो जाता है अर्थात् उसके अनिष्ट की इच्छा करने वाला स्वयं नष्ट हो जाता है। इसीलिए हमारे ऋषियों ने कहा कि सबसे पहले अन्दर ज्ञान का प्रकाश होना चाहिए। आज ज्ञान के स्थान पर श्रद्धा, अन्धविश्वास को महत्व दिया जा रहा है, जिसके प्रचार-प्रसार में तथाकथित गुरुओं का अत्यधिक योगदान है, जिन्होंने सस्ती मुक्ति का यह मार्ग बताया। बिना ज्ञान के कर्म सही नहीं हो सकते। श्रद्धा अन्धी है, जो कहीं भी गिरा सकती है। ज्ञान के अभाव में विवेक जागृत नहीं होता। स्थिर प्रवृत्ति बनना ही विवेक है। ज्ञान से प्रकाशित ध्यानावस्थित होने से मन अस्थिर नहीं रहता। मन को पवित्र बनाने के लिए सर्वप्रथम अपने आहार और व्यवहार को शुद्ध बनाने की आवश्यकता होती है। आज के मानव का आहार-व्यवहार शुद्ध नहीं रहा। आहार की शुद्धता के स्थान पर उसकी स्वादिष्टता और सुन्दरता पर ध्यान है। पहले हम आकाश तत्व की प्रधानता वाला भोजन करते थे, किन्तु आज हमारे भोजन में पृथ्वी तत्व अधिक है। अत खानपान पर भी ध्यान देना चाहिए। याद रहे कि मृत्यु को विजय करना ही अध्यात्मवाद है।

अतिथि सम्पादकीय- सुमन कुमार वैदिक

सहर्ष स्वागतम् : योग दिवस! २१ जून

आर्य प्रह्लाद गिरि

पूरे देश और दुनिया में बिना रूके, बिना थके घूम-घूम कर योग का अद्भुत-व्यापक प्रचार करने वाले योगर्षि रामदेव व राजर्षि (अत्यंत लोकप्रिय प्रधानमंत्री) नरेन्द्र मोदी के वैश्विक प्रभावों से ही 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित हुआ। यह महोपलब्धि भारत देश और हिन्दू धर्म के लिए तो गौरव की बात है ही अकाल मौतों से जूझ रही हमारी विश्व मानवता के लिए भी ये उतना ही सौभाग्य की बात है। किन्तु इतने भर से आत्म मुग्ध हो के इठलाना नहीं चाहिए, क्योंकि अभी भी हम अपने 'देश' से भ्रष्टाचारों और 'धर्म' से पुरोहिती-पाखंडों (धार्मिक दलालों) को मिटाये बिना न तो इस देश-धर्म का भला कर पायेगें और न प्यारी विश्व-मानवता का ही।

हम भारतीयों का सौभाग्य है कि हमारा निर्मल वेद और आदर्श-ऋषि पंतजलि कृत योग शास्त्र में सांप्रदायिक (मजहबी) पक्षपात रहित मानवोत्थान के चरमोत्कर्षी सारे गुण तो है किंतु कर्मकांडी-धर्माडंबर इसमें जरा सा भी नहीं है। ''ध्यान करने योग्य उस निराकार ईश्वर का नाम ओम् (प्रणव) है'' इसमें यदि यह भी लिखा न होता तो नास्तिक लोग इस ग्रंथ को भी अपनी जमात में मिला लेते। ईश्वर-प्रदत्त इस मानव शरीर को योग-विधि से चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने वाली इस वैज्ञानिक-पुस्तिका पर हमें गर्व है।

21 जून (कर्क संक्रांति-सौर आषाढ़ मास आरम्भ, दूसरे दिन से बरसाती नक्षत्र-आद्रा आरम्भ) को ही हमारी धरती का उत्तरी ध्रुव यानि ऊपरी भाग सूर्य के सामने सर्वाधिक झुका हुआ एवं सूर्य से काफी करीब होता है, जिससे समूचे उत्तरी गोलार्ध में साढ़े 13 घंटे का दिन और साढ़े दस घंटे की रात होती है। इस दिन का यह भी अर्थ हुआ कि धरती पर ज्यादा से ज्यादा ज्ञान का प्रकाश और सद्भाव का सुगंध फैले, तभी हम सब स्वस्थ और खुशहाल रहकर इस धरती-सभ्यता को भी सुदीर्घ-समृद्धि संपन्न बनाये रख सकेगें। स्वस्थ-सुखी-सुस्मित व्यक्ति ही सारे संसार को भी सुखी देखना चाहता है, रूग्ण तन-मन वालों से ऐसी उम्मीदें नहीं की जाती। इसीलिए आज प्रदूषित-पर्यावरणी प्रकोपों से बचे रहने के लिए योग-प्राणायाम का जन-जन में प्रचार करना अत्यावश्यक हो गया है। योग दिवस, योग सप्ताह के बहाने हम भी मानवतावादी समाजसेवी योग शिक्षकों-योग प्रेमियों का कर्तव्य हो जाता है कि इस दिन प्रातःकाल अमृत वेला में योग के सरल सर्वग्राह्य विधियों से परिचय कराते हुए दुनियां के बंधुओं (भाई-बहनों) से जुड़ें और जोड़ें, आंतरिक-विकारों को मिटाकर हर क़िस्म की दूरियों को तोड़ें। स्वयं निरोगी रहकर, सबको निरोगी रखकर, सबसे जुड़ने और सबसे जोड़ने का ही नाम है-योग यानी विश्व योग दिवस।

निंगा, आसनसोल (प.बं.)
मो० : 09735132360

सच मानिये

-यह जीवन भजन के लिये मिला है।
साथ-साथ संसार के काम करने थे।
-और हम संसार में ही उलझ कर रह गये।
भजन तो भूल ही गये।
-अब भी समय है-भजन के साथ-साथ संसार न सही,
संसार के साथ कुछ समय भजन के लिए अवश्य निकाले।

शुरू कैसे हो

उपरोक्त बातें सब जानते हैं। लेकिन भूल जाते हैं।
अतः इसका एक प्रिंट निकलवाइये और ऐसी जगह लगाइये
जहाँ आप और हम इसे दिन में दो चार बार पढ़ सकें।
एक न एक दिन समय आयेगा और यह सिस्टम शुरू हो जायेगा।

-विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार
शान्ति निकेतन, ५/१००, समता नगर, मुम्बई

कहाँ गये आर्य समाज के दीवाने प्रचारक

जनवाणी

महोदय,

'आर्यावर्त केसरी' पाक्षिक कभी तो समय से मिल जाता है कभी विलम्ब से प्राप्त होता है।

यह पत्रिका बहुत ही अच्छी है, आर्य समाज के प्रचारक में बहुत ही सहायक है। आज से पचास साठ वर्ष पहले जो संयासी, विद्वान, भजनोपदेशक जो आर्य समाज का प्रचार निःस्वार्थ भाव से करते थे वह स्थिति विद्वानों, भजनोपदेशकों की नहीं रही है। अब तो केवल पैसों के लिए प्रचार करते है। मेरे परदादा जी आर्य समाजी बने किसी आर्य विद्वान का सत्संग अजमेर में सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और वो वैदिक विचारधारा से जुड़े तब सवा सौ वर्ष पहले इस छोटे से गांव में उन्होंने बहुत ही अच्छा आर्य समाज भवन कुछ लोगों के आर्थिक सहयोग से बनवाया। ईश्वर कृपा से तब से आज तक हमारे परिवार में महर्षि दयानन्द जी की वेदानुकूल विचारधारा बह रही है। परन्तु बचपन में मैने जैसे आर्य समाज के प्रचारक मतलब दीवाने प्रचारक देखे वैसे प्रायः समाप्त हो गए है। यह स्थिति इस पैसठ वर्ष की आयु में देख कर बहुत ही दुःख होता है। हमारे परदादा जी के एक पुत्र थे उनके चार पुत्र और एक पुत्री हुई। ये सब पक्के आर्य समाजी थे। मेरे ताऊजी, पिताजी व दो चाचाजी इनके पांच-पांच, छः-छः पुत्र पुत्रियां हुई। इनकी शादियां पौराणिक लड़कियों व लड़कों से होने के कारण वैदिक विचारधारा शिथिल पड़ गई है। केवल मैं, मेरी पत्नी, दो पुत्र एक पुत्री तन, मन और धन से मैदान में डटे हुए हैं। हमारे परदादा जी के सत्य सिद्धांत पर ईश्वर कृपा से चल रहे है। आर्य समाज में प्रत्येक पंचायत स्थल पर आर्य समाज होनी चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज में स्थाई रूप से रहने वाला विद्वान होना चाहिए। उसका पूर्ण खर्च कोई ऊपर प्रधान समिति होवे वह उठावे तब जाकर कोई प्रचार हो सकता है। स्थाई रूप से रहने पर उसके सम्पर्क में दूसरे गांव के लोग आयेंगे, उसके व्यवहार से प्रभावित होकर आर्य विचार धारा से जुड़ेंगे। तब सही प्रचार हो सकेगा। दो दिन का वार्षिक उत्सव मनाया बात वर्ष भर के लिए समाप्त हो गई। यह केवल महर्षि दयानन्द जी के साथ धोखा है। आज पूरे राजस्थान में गांव के अन्दर केवल पांच सात गांव ही होंगे जहां आर्य समाज भवन है। यही हाल गांवों में पूरे भारत वर्ष के गांवों में है। आज छोटे से छोटे गांव में मस्जिद है जहां एक मुल्ला है जो मुसलमान गृहस्थियों पर आश्रित नहीं है उनका पूर्ण खर्च उनकी व्यवस्था एक के चले जाने पर दूसरा आना यह सब इनकी ऊपर की संस्था द्वारा संचालित है। अब क्या-क्या लिखूं इस आर्य जाति के पतन के बारे में पतन की सही स्थिति गांवों में ही मालूम है। दिल में आर्य समाज का जोश है जिसने उपरोक्त बातें लिखने पर विवश कर दिया है।

मनोहर सोनी (आर्य)
मु.पो. कड़ैल,
जिला-अजमेर (राज.) ३०५०२१

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दशा

1. इसके प्रथम गवर्नर जिन्ना ने ऐलान किया कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक द्वितीय श्रेणी के नागरिक माने जाएगें और उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं होगा।
2. यहां हिन्दू-सिख-ईसाई-कादियानी अल्पसंख्यक माने गए है। इनका प्रतिशत केवल 4 ही है।
3. शिया मुस्लिम 20 प्रतिशत है। सुन्नी मुस्लिमों के संगठन इन्हें भी अल्पसंख्यक घोषित कराना चाहते हैं।
4. आंतकवादी संगठनों के कार्यकर्ता अल्पसंख्यकों को तथा शियाओं को भिन्न-भिन्न तरीके से कष्ट पहुंचाते हैं और इस प्रयास में रहते हैं कि ये भी सुन्नी मुस्लिम बन जाएं।
5. पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्रसंघ और राष्ट्रमण्डल का सदस्य है अत: उसे अन्तर्राष्ट्रीय नियमों-कानूनों और परम्पराओं का भी पालन करना होता है।
6. मजबूरी में उसने चारों विधान सभाओं और राष्ट्रीय असेम्बली में कुछ सीटें अल्पसंख्यकों के लिए भी रखी हैं और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी बना रखा है।
7. अगस्त 1947 में मुस्लिम नेताओं ने लाहौर के बाल्मीकियों से कहा था कि वे भारत में नहीं जाएं बल्कि लाहौर में ही रहें ताकि लाहौर नगर की सफाई-कूड़ा उठाना-गन्दगी उठाने का कार्य भली प्रकार चलता रहे।
8. अब उग्रवादी-दबंग-शरारती तत्व इन्हें भी तंग करने लगे है। मन्दिरों की खाली जमीनों-शमशान भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर लेते है। शवों को जमीन में गाड़ने पर जोर देते है।
9. कई मंदिर टूटे पड़े है। कई मंदिरों पर बुलडोजर चलवाकर जमीन को समतल करके व्यापारी काम्पलैक्स, गैराज अथवा सड़कें चौड़ी कर दी गई है।
10. 25-30 वर्ष तक हाईकोर्ट में मुकदमा चला कि मंदिर खोला जाए। संयोग से जज ने निर्णय दिया कि कोई भी धर्म स्थल बंद नही रहेगा अत: रावलपिंडी का मंदिर खोल दिया गया। 4-5 दिन बाद आतंकवादियों ने मंदिर तोड़ दिया और मूर्तियां ध्वस्त कर दी।
11. कराची में सबसे बड़े मंदिर के चारों ओर 600 दुकानें किराए पर उठी हुई है। यहां के पुजारी इस्लामी टोपी ही पहनते है। सादा टोपी बाजार में उपलब्ध ही नही है। तत्कालीन राष्ट्रपति मुशर्रफ भी इस मंदिर को बाहर से देखने गए थे।
12. कराची में पुराना शवदाह स्थल है। मृतकों की अस्थियां घड़ों में रखी जाती है। 30-40 वर्षों के बाद पाकिस्तान सरकार ने 100-150 घड़ों को भारत ले जाकर गंगा में प्रवाहित करने की आज्ञा दी।
13. ऊंची आवाज से भजन-कीर्तन नहीं करने दिया जाता है। पूजा अर्चना किवाड़ बंद करके धीमी आवाज से करने की अनुमति है।
14. अपहरण, चोरी, डकैती, धर्म परिवर्तन, लड़कियों का धर्म बदलकर निकाह करा देना, धमकी देकर धन लूटना, धर्म बदलने के लिए दबाव डालना, गौहत्या, जजिया कर लेना आम बात हो गई है।
15. हिन्दू संस्कृति के अनुसार नया मकान बनाने की अनुमति नही दी जाती है अत: सादे मकान ही बनाने पड़ते हैं। हिन्द2 यदि ईद-बकरीद मनाते है तो ही होली-दीपावली मनाने दी जाती है।

शैलेन्द्र जौहरी
एडवोकेट, अतिरिक्त अध्यक्ष (द्वितीय),
सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर
(हिन्दु महासभा का सहयोगी संगठन)
निवास-४५५, धर्म सिंह वाली गली, साठा, बुलन्दशहर,
मोबा. : 9897033358

विश्वव्यापी आर्यसमाज के समाचार
आर्यसमाज की आधिकारिक वेबसाइट पर
www.aryasmaj.com
अपनी संस्था की सूचनाएं भी अपलोड कर सकते हैं।
अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

संसार का श्रेष्ठतम् कर्म है यज्ञ

ज्ञान प्रकाश पाण्डेय

दैनिक अग्निहोत्र 5 ♦.हायज्ञों में से एक महायज्ञ जिसे मात्र 15 से 20 मिन्टो में सम्पन्न किया जाता है। इसे प्रतिदिन प्रात: सूर्योदय व सायं सूर्यास्त के समय करने का विधान है। यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म अर्थात् सबसे महान कार्य को कहते हैं। इसलिए कि इसमें ईश्वर, माता-पिता, विद्वानों, अतिथियों सहित जड़ देवों की पूजा व सत्कार भी होता है। उनसे संगतिकरण के द्वारा उनके ज्ञान व अनुभव को प्राप्त भी किया जाता है। यज्ञ में दान दिया व लिया भी जाता है। इसके साथ दैनिक यज्ञ में जो हव्य-द्रव्य प्रयोग में लाये जाते हैं उनमें गोघृत मुख्य है। इसके अतिरिक्त मिष्ठ पदार्थ शक्कर व मोहनभोग आदि, वनस्पतियां व औषधियां तथा केसर व कस्तूरी जैसे सुगन्धित पदार्थो से भी वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ में आहुतियां दी जाती है। आहुतियां देने का क्या प्रयोजन है? इसका प्रयोजन है कि अग्नि देवताओं का मुख है। यह प्राकृतिक जड़-देवताओं को हमारे हव्य पदार्थों का भोजन कराता है। भौतिक विज्ञान के आधार पर विचार करें तो अग्नि गोघृत व हवन सामग्री को जला कर अत्यन्त सूक्ष्म व हल्का कर देती है। अग्नि में जलने पर सूक्ष्म हो जाने पर यह सभी पदार्थ वायुमण्डल में दूर-दूर तक फैल जाते हैं। इनके फैलने से इन सूक्ष्म हव्य पदार्थों, जो कि एक प्रकार से गैस व परमाणुओं की अवस्था में होते हैं, वह एक स्थान पर किये जाने वाले यज्ञ से कई किलोमीटर दूर तक के वातावरण में फैल कर उसे अपने सुगन्धित-पुष्टि-वायुशुद्धि आदि नाना गुणों से प्रभावित करते हैं। हमें वेदों व शास्त्रों में पढ़ने को मिलता है कि यज्ञ में दी गई आहुतियां सूर्य की किरणों के साथ सूर्य तक पहुंच जाती हैं और वायुमण्डल को लाभ पहुंचाती हैं। यह यद्यपि कुछ-कुछ अविश्वसनीय प्रतीत होता है परन्तु यह पूर्ण सत्य भी हो सकता है। अभी तक इसकी वैज्ञानिक पुष्टि या खण्डन सम्भवत: नहीं हुआ है। अत: 50 प्रतिशत तो यह शास्त्रीय वचन सत्य सिद्ध हो ही रहा है। यह तो सर्वविदित है कि सूक्ष्म व हल्के पदार्थ जो पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण के प्रभाव से मुक्त होते हैं वह पृथ्वी द्वारा आकर्षण बल से प्रभावित न होने के कारण पूरे सूर्य लोक व ब्रह्माण्ड में फैल सकते हैं। यदि ऐसा है तो यज्ञ वस्तुत: एक चमत्कार पूर्ण वैज्ञानिक व श्रेष्ठतम कार्य सिद्ध होता है।

अब घृत के कुछ गुणों पर भी दृष्टि डालते हैं। गोघृत सुगन्धियुक्त, पुष्टिवर्धक, बलवर्धक, रोगनिवारक, किटाणुनाशक, आयुवर्धक, सर्वविषनाशक, रेडियोधर्मितानिरोधी आदि अनेकानेक गुणों वाला है। यह भी एक तथ्य है जिसका उल्लेख महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी किया है कि ठोस व द्रव अवस्था में किसी पदार्थ में जो गुण होते हैं व उनसे जो लाभ होते हैं वह उनके सूक्ष्म होने पर कहीं अधिक होते हैं या उनका प्रभाव कई गुना अधिक होता है। अत: यज्ञ एक ऐसा उपक्रम व कार्य है, जिसमें गोघृत व अन्य आहुत द्रव्यों मिष्ट पदार्थ, सुगन्धित पदार्थ, पुष्टिकारक पदार्थ, रोग निवारक वनस्पतियां व औषधियों को सूक्ष्म बनाकर स्वयं व सभी प्राणियों को अधिकाधिक लाभ पहुंचाया जाता है। हमारे ऋषि मुनि आजकल के विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों व वैज्ञानिकों से कहीं अधिक बुद्धिमान थे। इसी कारण उन्होंने वेद प्रतिपादित यज्ञ का आविष्कार किया और इससे विश्व का कल्याण करने का सबसे उत्तम साधन जानकर प्रचार किया। आज यज्ञ ईसाई व मुस्लिम आदि मत-मतान्तरों के पक्षपात का शिकार है।

हमारे पौराणिक भाई वेदों में कुछ-कुछ श्रद्धा तो रखते हैं परन्तु वह वेदों से कहीं अधिक दूर है। उन्होंने भी वेद विरोधी व अविद्याजनित पुराण आदि मनुष्य कृत ग्रन्थों को अपने धर्म-कर्म का आधार बना रखा है। यज्ञों के प्रति उनमें जो प्रेम व श्रद्धा होनी चाहिये वह दिखाई नहीं देती। उनकी यज्ञ पद्धति भी वेद व आर्ष नहीं है। यज्ञ का सत्य स्वरूप उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द को प्रत्यक्ष हुआ था। उन्होंने यज्ञों का न केवल महिमागान ही किया अपितु यज्ञ की सत्य व सर्वोपयोगी पद्धति भी हमें प्रदान की। उनका लिखित ग्रन्थ? संस्कारविधि? संसार के सभी ग्रन्थों में अतीव महत्वपूर्ण व अनुपमेय-यूनिक है। हम आग्रह करते हैं सत्याभिलाषी अध्येता व जिज्ञासु बन्धुओं को महर्षि दयानन्द रचित उनका समस्त साहित्य पढ़कर धर्मलाभ प्राप्त करना चाहिये।

आज की इन पंक्तियों को लिखने का हमारा उद्देश्य यज्ञ के बारे में एक नया तथ्य प्रस्तुत करना है। हम 14 फरवरी से 22 फरवरी, 2015 तक अहमदाबाद, टंकारा, सोमनाथ मन्दिर, द्वारका तथा पोरबन्दर के भ्रमण पर गये। हमारे साथ हमारे दो मित्र, एक वैदिक विद्वान श्री कृष्णकान्त वैदिक तथा दूसरे श्री ललित कृष्ण अग्रवाल थे। सभी की धमपत्नियां भी साथ थीं। यात्रा करते हुए हमने यज्ञ की चर्चा की तो श्री अग्रवाल ने हमें सूचित किया कि उन्होंने नैट पर कहीं वैज्ञानिक शोध के बारे में पढ़ा है कि यज्ञ में 10 ग्राम की गोघृत की आहुति देने से 1 टन प्राणवायु ऑक्सीजन बनती है। उनकी यह बात हमें अतीव ज्ञानवर्धक, रूचिकर व सत्य प्रतीत हुई। हमने इसका सन्दर्भ उनसे पूछा तो उन्हें वह याद नहीं आया। इसके बाद यात्रा में व देहरादून पहुंच कर हमने नैट पर सर्च किया परन्तु हमें इसमें सफलता नहीं मिली। 23 फरवरी, 2015 को एक वेबसाइट पर सर्फिंग करते समय हमें वहां एक लेख गाय को माता क्यों कहते हैं दृष्टिगोचर हुआ। हमने वह लेख पूरा पढ़ा। इस लेख में भी नेशलन रिसर्च ईस्टिट्यूट, करनाल के इस वैज्ञानिक अध्ययन व स्टडी की चर्चा है कि 10 ग्राम की गोघृत आहुति से 1 टन प्राणवायु उत्पन्न होती है। गोघृत के अन्य लाभों का भी लेख में वर्णन है। हमने लेख पर अपनी प्रतिक्रिया में लेखक महानुभाव डा. अ. कृति वर्धन का धन्यवाद किया और उनसे इसका विस्तृत प्रमाण व सन्दर्भ सूचित करने का अनुरोध किया। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक उनसे कोई उत्तर प्राप्त न होने पर हमने वेबसाइट के संचालकगणों से अनुरोध किया कि वह लेखक का इमेल हमें प्रदान करें जिससे हम उनसे सीधा सम्पर्क कर सकें। लेख का सम्बन्धित भाग हम नीचे प्रस्तुत कर रहें हैं।

नेशनल रिसर्च इंस्टिट्यूट, करनाल-हरियाणा से प्रकाशित एक आलेख में गाय के घी का वैज्ञानिक विश्लेषण बताया गया है जिसके अनुसार इस घी में वैक्सीन एसिड, ब्युटिक एसिड, वीटा कैरोटीन जैसे तत्व पाये जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्वों से लड़ने की क्षमता रखते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा यह भी माना गया है कि गाय के 10 ग्राम घी को दीपक में जलाने, गोबर के जलते उपलों पर डालने अथवा यज्ञ में आहुति डालने से लगभग एक टन प्राण वायु उत्पन्न होती है तथा उससे वायुमंडल में एटोमिक रेडियशन का प्रभाव कम हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भोपाल में 1984 में यूनियन कार्बाइड कारखाने से गैस रिसाव के समय देखने को मिला। जिन घरों में गाय के गोबर, मूत्र, दूध व घी का प्रयोग था वहां गैस का प्रभाव कम पाया गया था।

हम समझते हैं कि यज्ञ द्वारा गोघृत से प्राणवायु उत्पन्न करने पर अभी और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है। अन्य मत व धर्मों के वैज्ञानिक व विद्वान सम्भवत: सप्रयोजन इस वैदिक ज्ञान की उपेक्षा कर रहे हैं व करेंगे परन्तु आर्य जगत के रसायन विज्ञान के अध्येता, प्रोफेसर व वैज्ञानिक बन्धुओं को इस ओर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिये और इसकी पुष्टि में जितने भी प्रमाण प्राप्त हो सकें, उनको वैज्ञानिक रीति से सिद्ध कर संसार के सामने डंके की चोट पर रखना चाहिये और वैदिक धर्म व यज्ञ को अपनाने का आग्रह करना चाहिये।

शिव अवतार सरस की रचनाएं

भारत को 'भा' रत रहने दे

उदर-गुहा से माता आज तू इस भू-तल तक आने दे।
मैं भी तेरा अंश कहाऊं जीवन-पथ अपनाने दे।
'वंश' पुत्र से ही चलता है यह निश्चित मिथ्या आरोप।
पुत्री ही तो जननी बनती फिर क्यों कन्याओं का कोप?
मात-पिता कन्या को मारे तब क्या संभव जन-प्रजनन?
क्या केवल पुत्रों के द्वारा हो पाएगा सृष्टि सृजन?
पुत्र-लालसा, लोभ, लाभ-वश मचा आज भारी विध्वंस।
निजकुल की कन्या की हत्या पिता कर रहे बनकर 'कंस'।।
कन्या दर घट रही निरन्तर फैलेगा इससे व्यभिचार।
बहुपति प्रथा आयेगी भू पर और करेगी जन-संहार।।
भारत को 'भा' रत रहने दे मत प्रतिभा को जाने दे।
मुझको देदे जन्म और मत महाभारत को आने दे।।

स्वच्छ स्वस्थ हो भारत अपना

सभी स्वस्थ हो सभी निरोगी सबमें हो सद भावना।
स्वच्छ सुखी हो भारत अपना करें राष्ट्र आराधना।।
स्वस्थ सबल तन में होता है सरल सहज मन का आवास।
शुद्ध सात्विक नियमित हो सब सभी नागरिक करें प्रयास।।
सबका हित सबका विकास हो मिलें प्रगति हित सम अवसर।
मिटे भिन्नता मिले परस्पर सेवक हो या हों अफसर।।
वैदिक मत अपनाएं हम सब नियमित-संध्या होम हो।
सभी देव आराध्य रहे पर सबसे ऊपर ओम हो।।
अनहित करें न अनहित सोचें जनहित में हो साधना।
स्वच्छ स्वस्थ हो भारत अपना हम सब करते कामना।।

साध्य, साधना, संसाधन

अब आवश्यक है भारत में बदले चाल चरित, चित्रण
मिले सभी को सम्यक सुविधा संसाधन का सम वितरण
कहीं न होवे धनाभाव तो कहीं न हो अतिशय संचय
बाल, वृद्ध, रोगी, विधवाएं, दीन-दलित सब रहें अभय।।
सभी अंश हैं परमपिता के मिले सदा समुचित हिस्सा
अपने दम पर बढ़े सभी जन मिटे द्वन्द्व दुःख का किस्सा
घर का मुखिया मुख समान हो पाले पोसे सकल शरीर
अंश दान कर सब अंगो को करे न उनको कभी अधीर।।
यह समाज है देह-सरीखा पृथक-पृथक है सबके कर्म
जो जिसमें हो निपुण उसी को करना समझें अपना धर्म
जन्माधारित मिटे व्यवस्था कर्माधारित हो सब वर्ग
जात-पात का, ऊंच-नीच का, भेद मिटे तब आवे स्वर्ग।।
धर्म नहीं ऊपर से आता हम खुद ही करते धारण
इसी धर्म के कारण संभव स्वस्थ राष्ट्र का निर्धारण
धन के कारण धर्म न त्यागे सबका हो विधिवत् कल्याण
धर्म, अर्थ, अरू काम, मोक्ष से पायें सब सम्यक निर्वाण।।
मुक्ति नहीं उस जन की संभव जो पथ से हो जाता भ्रष्ट
अगर न धन का सदुपयोग हो तब वह खुद ही होता नष्ट
अतः साध्य हो श्रेष्ठ सभी के और सात्विक हो साधन
तभी साधना पूरी होगी पूर्ण समर्पित आराधन।।

पर्यावरण दिवस

जीवन में गर सदाचरण हो, बदल जायेगा पर्यावरण।
इस परिवर्तन से ही होगा, पंचतत्व का समवितरण।।
मगर स्वार्थवश हमने त्यागे, मूलधर्म के दस लक्षण।
बड़ी-मीन बन सभी मान्यजन, करते 'छोटी' का भक्षण।।
पर्यावरण-दिवस पर होता, कागज पर वृक्षारोपण।
केवल गमलों में तरू सजते, छप जाते झूठ विवरण।।
अन्य राष्ट्रीय-पर्वो जैसा, बना दिवस यह पर्यावरण।
भूल गये राष्ट्रीयता, विकृत कर सब समीकरण।।
सदाचरण के इस विपर्यय से, दब-ढक जाते सब प्रकरण।
विकास न पाते तरू वन-उपवन, साध्य बने हैं धन साधन।।
अगर प्रदर्शन-भाव मिटे तब, चमके पोल चरित चित्रण।
समता समरसता हो मन में, लक्ष्य न हो जब आरक्षण।।
आज जागरण हित आया कवि, लेकर भारतीय दर्शन।
साध्य उच्च हो और साथ ही, श्रेष्ठ रहे सब संसाधन।।
आत्मभाव से अगर नागरिक, करे प्रकृति का अनुशीलन।
तब निश्चित ही हो जायेगा, जग की तृष्णा का तर्पण।।
-मालती नगर, मुरादाबाद

देवातिथि देवनारायण भारद्वाज की दो रचनाएं

नदिया के पार

सखा सखा की कौरी भर लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।
दुनिया नदिया पथरीली है।
चिकनी दुखनी रपटीली है।
अति तेज धार अति वेग भार,
यह यत्र तत्र भंवरीली है।
प्रभु से प्रेमालिंगन कर लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।1।।
अशिव गठरिया पाप घनेरा।
संचित अपना असत अंधेरा।
अरे उतारो इसको फैंको,
अपनाओ श्रुति ज्ञान सवेरा।
मिलकर सखा संगठन कर लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।2।।
यह तेरी देह नवैया है।
तेरे गुण धर्म खिवैया हैं।
सब अवगुण व्यसन डुबोते हैं,
सद्‌गुण ही पार लगैया हैं।
शुभ कर्मों की राह पकड़ लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।3।।
मिलकर उत्साह जगाते जो।
वर वीर भाव उमगाते जो।
दुर्गम जीवन धाराओं को,
सब सहसा ही तर जाते वो।
सत् संयम से संगम कर लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।4।।
तुम इधर अमंगल छोड़ोगे।
तो उधर सुमंगल पाओगे।
रोग-शोक की जड़ विनाश कर,
मोदान्न उधर पा जाओगे।
इधर जगत जगदीश उधर लो।
जग नदिया के पार उतर लो।।5।।

-: स्रोत :-

अश्मन्वती रीयते सं रभध्वं वीरयध्वं प्र तरता सखायः।
अत्रा जहीत ये असन् दुरेवा अनमीवानुत्तरेमाभि वाजान्।।
उत्तिष्ठता प्र तरता सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम्।
अत्रा जहीत ये असन्नशिवाः शिवान्त्स्येनानुत्तरेमाभि वाजान्।।
(अथर्व 12. 2. 26-27)

प्रभु-ज्योति हृदय में

पितरों की कृपा कमाई है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आयी है।।
यह अग्नि न जलती बुझती है।
प्रज्वलित सदा ही रहती है।
जो मरणशील हों शरणशील,
यह अमर बनाया करती है।
यह जिसने भी अपनायी है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आयी है।।1।।
मृत्तिका मूर्ति की मरणाई।
या उसकी क्षणभंगुरताई।।
प्रभुवर के प्रवेश स्पर्शन से,
बनती अमराई स्वर्णाई।
वसुधा सुखदा मन भाई है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आयी है।।2।।
जो प्रभु पाकर उमगाते हैं।
आलिंगन करते जाते हैं।
इस ओर नहीं, उस ओर नहीं,
सब ओर उन्हीं को पाते हैं।
मिलनी यह खूब मिलाई है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आई है।।3।।
क्यों द्वेष करेंगे वे हमसे।
जब करते द्वेष न हम उनसे।
दीवार द्वेष की दूर हुई,
अपनत्वन हो गया तब सबसे।
संसृति से स्नेह सगाई है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आयी है।।4।।
सदा अग्रणी अग्नि रही है।
सूर्य-व्योम या भूमि (मही) है।
मुझे सुहाती प्रभु-उपासना,
प्रभु ने मेरी बांह गही है।
पितरों ने राह दिखायी है।
प्रभु-ज्योति हृदय में आयी है।।5।।

-: स्रोत :-

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्वन्तरा विवेशामृतो मर्त्येषु।
मय्यहं तं परि गृहणामि देवं मा सो अस्मान्
द्विक्षत मा वयं तम्।।
(अथर्व0 12. 2. 33)

वरेण्यं अवन्तिका (प्रथम), रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ0प्र0)

अपनी परछाईं

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'

धन दौलत के लिए चाहिए, चालाकी चतुराई।
पाकर जिसे फूला न समाए, रहे सदा नितराई।
दुल्लति दुर्गति पड़ी अचानक, सकल गयी छितराई।
है कोई देखनहारा निर्मम, करे वसूल पाई पाई।।
उलटफेर की उलटबासियां, सहे न एक सुनवाई।
निर्णय में तिकड़म न कोई, चित्रगुप्त रखता भाई।।
सब उसके हैं तू भी उसका, भेद करे न साईं।
बिन मांगे सबको ही देता, उसकी ही परछाईं।।
-नेमदार गंज, नवादा बिहार

गाय की रक्षा-जीवन सुरक्षा

रमेश सिंह आर्य एडवोकेट, मुरादाबाद

हत्यारे हों जेल में-तभी होगी रक्षा।।
गाय की सुरक्षा-जीवन की रेल। हत्यारों को भेजो जेल।।
गाय हमारी माता है---जन्म-जन्म का नाता है।
हत्यारा उसे सताता है-तनिक नहीं शर्माता है।।
कटती गाय करे पुकार। कहां गई क्षत्रिय तलवार।।
गौ-माता का अपमान। नहीं सहेगा आर्य समाज।।
जो गाय को कटवाता है। घोर नरक में जाता है।।
जिस घर गाय पलती है। सभी बिमारी हरती है।।
गाय का दूध अमृत समान। हमको देती जीवन दान।।

जमीर क्यों सो गया?

मुकेश कुमार 'ऋषि वर्मा', रिहावली, आगरा (मो. : 9627912535)

अब वो पहले वाली रीत नहीं।
प्रीत नहीं।।
अधर्ममय हुआ जमाना।
मयखाना बन गया ठिकाना।।
वैद ऋचाओं का गान नहीं।
मान नहीं।।
अंध बाबाओं की कटती चांदी।
स्विस बैंकों को भरती खादी।।
भाईचारा-शिष्टाचार का अता नहीं।
पता नहीं।।
दगाबाज मानव हो गया।
आज हमारा जमीर क्यों सो गया?

रचनाकार ध्यान दें!

यदि आप अपना काव्य संग्रह या काव्य संकलन मुद्रित एवं प्रकाशित कराना चाहते है, तो आर्यावर्त प्रकाशन से सम्पर्क करें।
आर्यावर्त प्रकाशन
सौम्या सदन, गोकुल विहार, अमरोहा (उ0प्र0)
मोबा0: 9412139333

वैदिक धर्म अपनाने तथा ईश्वर का सत्य स्वरूप बताने से ही जीवित रहेगा आर्य समाज

अश्विनी कुमार पाठक

आर्य समाज एक क्रांतिकारी और प्रगतिशील संगठन है। इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द ने प्रजातंत्र के आधार पर 1875 ई. में की थी। उन्होंने अपने मन्तव्यों में यह लिखा था कि मैने आर्य समाज को किसी नए मत अथवा सम्प्रदाय के रूप में स्थापित नहीं किया। मेरा धर्म तो सत्य सनातन वैदिक धर्म है जो ब्रह्मा से जैमिनि मुनि तक चलता आया है। उसीके प्रचार के लिए मैंने आर्य समाज की स्थापना की है। वह चार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ मानते थे। जो सृष्टि के प्रारम्भ में चार ऋषियों द्वारा प्राप्त हुए थे। उन्होंने आर्यसमाज के 10 नियम बनाए थे जो मानव निर्माण के साधन हैं। इनमें ईश्वर को निराकार तथा सृष्टि का कर्ता पालने वाला तथा संहार करने वाला बताया है। महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर बताया था कि ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं है इसलिए अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मूर्ति पूजा तथा अवतार का विरोध किया था। वह वेद को ही सर्वोपरीय ग्रंथ मानते थे तथा अन्य ग्रंथों की उन्हीं बातों को मानते थे जो कि वेदानुकूल हों। अन्य मत मतान्तरों की उन्होंने कई बुद्धि विरूद्ध तथा वेद विरूद्ध बातों की आलोचना की थी। आर्य समाज के छटे नियम में यह लिखा है कि संसार का उपकार करना अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। चौथे नियम में यह कहा गया है कि सत्य के ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। उन्होंने यह कहा था कि हमारा प्राचीन नाम आर्य है हिन्दू नहीं। वह बाल विवाह और सती प्रथा के विरोधी थे। उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज अब अपने देश के अतिरिक्त कई दूसरे देशों में भी स्थापित हो चुका है। इस समय दस हजार के लगभग आर्य समाजें कार्यरत हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक स्कूल कालेज डी.ए.वी. के नाम 800 के लगभग चलाए जा रहे हैं तथा गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय तथा अनेक स्कूल चल रहे है। समाज सुधार तथा देश उद्धार आर्य समाज ही कर सकता है। परन्तु कुछ समय से आर्य समाज हवन यज्ञों तक ही सीमित हो गया है। इसलिए ईश्वर के नाम पर पाखंड और विद्वान पाखंडी लोगों से डर कर वेद का प्रचार नहीं कर रहे जबकि वेद में स्पष्ट कहा है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' अर्थात उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है। यजुर्वेद 32-3 यजुर्वेद के 40-8 में यह बताया है कि ईश्वर निराकार है और नस नाड़ियों वाला नहीं है। वेदों में एक भी मंत्र ऐसा नहीं है जिसमें यहकहा हो कि ईश्वर की इस प्रकार मूर्ति बनाकर उसकी पूजा की जाए। संसार में कई मत अथवा धर्म है परन्तु सब ईशवर को निराकार ही मानते है। निराकार कभी साकार नहीं हो सकता क्योकि साकार वस्तुएं नाशवान है। एक न एक दिन नष्ट हो जाएगी परन्तु परमात्मा तो हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसकी प्राप्ती का एक मात्र साधन पतंजली मुनि द्वारा वर्णन किया योग ध्यान है। हमारे देश में तथा कथित सनातन धर्म को मानने वाले ही कुछ लोग है जो ईश्वर को साकार मानकर मूर्ति पूजा करते तथा श्रीराम, कृष्ण इत्यादि महान पुरूषों को ईश्वर के अवतार मानते हैं जबकि श्री राम, श्री कृष्णतो स्वयं ईश्वर भक्ति अर्थात संध्या हवन करते थे जो रामायण व महाभारत में स्पष्ट लिखा है। बाल्मीकि रामायण युद्ध कांड में स्पष्ट लिखा है कि राम ने कहा मैं दशरथ का पुत्र राम हूं और अपने को मनुष्य ही मानता हूं। श्री कृष्ण तो कौरव पांडवों में संधि भी नहीं करवा सके जिसके कारण बड़ा भयानक युद्ध हुआ उसके बाद सब धर्म कर्म नष्ट हो गया तथा कई नए नए मत चल पड़े। श्री राम ने गुरू वशिष्ठ तथा विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त की थी तथा श्री कृष्ण ने संदीपन मुनि से शिक्षा प्राप्त की थी। पण्डे पुजारियों ने अपने स्वार्थ के लिए इन्हें ईश्वर के अवतार घोषित कर दिया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा, सरस्वती, अग्नि, वरूण वगैरह वेदों में ईश्वर के कई नाम बताए हैं। जिनका अर्थ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में किया है। इन नामों वाले अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि कोई दिव्य गुणों वाले देवता लोग भी हुए होंगे परन्तु अब कहीं नजर नहीं आते। पुराणों में इनका इतिहास वर्णन है। इन सबकी मूर्तियां बनाकर पूजा की जा रही है। इससे पंडे, पुजारियों, संतों, महन्तो को करोड़ो रूपयों की आमदनी है। इसलिए इसे छोड़ना नहीं चाहते। और तो और भागवत पुराण स्कन्ध 10 अध्याय 84 के श्लोक 11 और 13 में तो यह कहा है 'न हयूम्यानि तथानि न देवा मृच्छालमया' अर्थात पानी के तीर्थ नहीं होते और मिटटी पत्थर के मूर्तियां या देवता नहीं होते। यह चिरकाल तक पूजने से भी पवित्र नहीं करते। इन मूर्तियों में देवता बुद्धि और पानी में तीर्थ बुद्धि रखने वालों को नीच गध ा कहा गया है। गीता प्रेस गोरखपुर वालों ने इस श्लोक के हिन्दी अनुवाद में केवल शब्द अपनी तरफ से जोड़ दिया है जबकि श्लोक में यह केवल शब्द नहीं है इस प्रकार अर्थ बदलने का यत्न किया गया है अर्थात केवल पानी के तीर्थ नहीं होते केवल मिटटी पत्थर की मूर्तियां नहीं होती। इस प्रकार छल किया गया है।आर्य समाज के लोगों को महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार सब जगह अपना धर्म वैदिक ही लिखना लिखाना चाहिए तभी आर्य समाज जीवित रहेगा क्योकि धर्म और मत तो हमेशा चलते रहते है। संस्थाएं हमेशा नहीं चलती। इनको वेद के प्रचार करने से डरना नहीं चाहिए। परिवार भी वैदिक धर्मो बनेगे तभी उन्नति होगी।

-सी-२३३, नानकपुरा,
नई दिल्ली-२१

वेदमंत्र

आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काय देव जीवो जनिष्ठाः ।
भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमे वैः ॥

(ऋग्वेद 1/68/2)

प्रस्तुत वेदमंत्र में ज्ञानपूर्वक कर्मो से देवत्व प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग पर चलने की प्रेरणा की गयी है। तपस्या रूप व्रतादि, उपवास से हृदय निर्मल होकर प्रभु का प्रकाश मिलता है। अकर्मण्यता और प्रभुभक्ति का अभाव मनुष्य को असुर बना देता है। ज्ञानपूर्वक क्रियाशीलता से शरीर नीरोग रहता है, उसकी शक्ति स्थिर रहती है, हृदय में बुरे विचार उत्पन्न नहीं होते। इस प्रकार शरीर, मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। यज्ञादि उत्तम कर्मो का सेवन होता है, जिससे देवत्व की प्राप्ति होती है।

हम ज्ञान व कर्म का विकास कर, देवत्व प्राप्त करें और अमरता-मोक्ष की ओर बढ़ें। आलस्य में निरंतर निराशा रहती है।

डेंगू उपचार

आचार्य बालकृष्ण, पतंजलि योगपीठ के द्वारा डेंगू उपचार में निम्न जानकारी प्रदान की गयी है। गेंहू का ज्वारा, ऐलोवेरा, गिलोय के साथ पपीते के पत्ते को मिक्सी में पीस लें और उसके रस को सेवन एक सप्ताह तक करें।

दो-दो घण्टे के अन्तराल से एक-एक चम्मच।

अनुलोम-विलोम करना चाहिए।

-कृष्णमोहन गोयल
बाजार कोट
अमरोहा

आर्य समाज- बुलन्दशहर

स्थापना का ५०वां वर्ष : १५ जुलाई २०१५

इस आर्य समाज की स्थापना का श्रेय टीकाराम सरोज, शिवनन्दन दास आढ़ती, कृपाशंकर, राधेश्याम जिन्दल,नारायण दत्त शर्मा, रघुनाथ प्रसाद मित्तल, राजाराम, इन्द्रदेव गुलाटी, वासुदेव शर्मा, कैलाश चन्द्र आर्य को है। इसकी स्थापना 24.07.1966 को टीकाराम सरोज के निवास स्थान प्रेमनगर में हुई थी। हवन-सत्संग में उस दिन उपस्थित जनों की संख्या 45 थी। श्रीमती सुमन कुमारी सरोज ने बाजे के साथ 2-3 भजन गाए थे। प्रथम चुनाव में टीकाराम सरोज-प्रधान, शिवनन्दन दास-मंत्री, तथा इंद्रदेव गुलाटी-कोषाध्यक्ष चुने गए थे। साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग वहां दो महीने ही चला क्योंकि प्रधान व मंत्री में मतभेद हो गए थे।

शिवनन्दन दास के प्रयास से साप्ताहिक कार्यक्रम मंडी फतेहगंज की धर्मशाला में आरम्भ किया गया। उसमें मोहनलाल शर्मा, तेज सिंह, रिसाल सिंह, देवेन्द्र कुमार शर्मा, वेदप्रकाश सुमन, रमेश सिंह राघव, जे. पी. शर्मा, राधेश्याम गुप्ता, श्याम लाल शर्मा, धनन्जय, यशपाल सिंह, किशोरी लाल आदि नए सदस्य बने।

उदयवीर सिंह प्राय: सत्संग रखते थे। समाज आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ से सम्बन्धित हो गई। 1966 से कई वर्ष तक मोती बाग के मैदान में वेद प्रचार सप्ताह जोर-शोर से मनाया जाता था। कर्णवास से बाबूलाल दीक्षित तथा अलीगढ़ से डा० रघुवीर शरण समय-समय पर आते रहते थे। कार्यक्रम का उद्घाटन जिलाधीश से कराया जाता था। कार्यक्रम प्रातः एवं रात्रि को होता था। श्रोताओं की संख्या अच्छी हो जाती थी। अशिक्षित ब्रह्मचारी कृष्णादत्त पूर्व जन्म की स्मृति के आधार पर अद्भुत प्रवचन लेटकर देते थे वे बरनावा से यहां कार्यक्रम में कई बार आये थे। भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद अलीगढ़ की शाखा 1968 में खोली गई।

आर्य समाज की धार्मिक परीक्षाएं वर्ष में दो बार होती थी। मैने सिद्धान्त प्रवेश-सिद्धान्त विशारद और सिद्धान्त भूषण की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। राधेश्याम जिन्दल ने कड़ी मेहनत कई वर्षो तक की जिसके कारण अनेको लोग समाज के सदस्य बने। कुछ वर्षो के बाद ध र्मशाला में कार्यक्रम बंद करना पड़ा। फिर शिवनन्दनदास की दुकान के आगे कार्यक्रम चलता रहा। संयोग से शिवनन्दन दास की वार्ता प्रसिद्ध दानवीर ललिता प्रसाद कंसल से हुई। इस वार्तालाप में निश्चय हुआ कि भविष्य में हवन-सत्संग ललिता प्रसाद की कोठी पर हुआ करेगा और उन्होंने आश्वासन दिया था कि वे उचित समय पर आर्य समाज का अपना भवनभी बनवा देंगे। ललिता प्रसाद जी का स्वर्गवास जल्दी हो गया। फिर आनन्द कुमार कंसल (बड़े पुत्र) प्रधान बने। बाद में भाइयों में बंटवारा हो गया। अब उनके तीसरे पुत्र सन्तोष कुमार कंसल प्रधान हैं। हवन तथा प्रसाद का सारा व्यय वे ही उठा रहे हैं। 7 जून 2015 से हवन-सत्संग लक्ष्मी नगर में हो रहा है। डा. गिरीश चन्द्र गुप्त मंत्री हैं। उपस्थिति 15 के लगभग रहती है। इसमें ख्याली राम, ओमप्रकाश, प्रेमकुमार कंसल, सुनील कुमार कंसल, जगजीत प्रकाश सूद, सतीश चन्द्र गोयल, डा. बुद्ध प्रकाश, मदन मोहन भसीन आर्य, महेश कुमार शर्मा भी आते हे।

विवाह- एक नेपाली युवती का विवाह भी कराया गया।

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली-1947 से 1971 तक लाल किले की प्राचीर से आखों देखा हाल में 15 अगस्त को इस समाज का नाम नहीं बोला जाता था जबकि अन्य धर्म स्थलों के नाम बोले जाते थे। उपमंत्री की हैसियत से मैने वीर अर्जुन अखबार में पत्र लिखा जिसका प्रभाव यह हुआ कि 1972 से आर्य समाज दीवान हाल भी बोला जाने लगा। दूरदर्शन का प्रचलन बढ़ने पर इस आर्य समाज को भी दिखाया जाता है।

सार्वदेशिक साप्ताहिक-प्रधान पद के कार्यकाल में मेरे लिखने पर यह अखबार जनता पुस्तकालय और हिन्दी साहित्य परिषद में प्रचारार्थ नि:शुल्क कई साल तक आया।

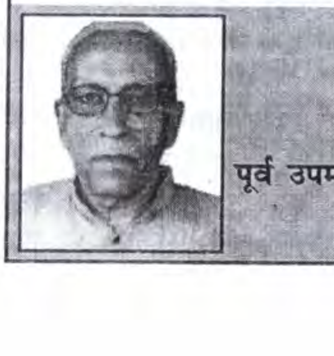

-इन्द्रदेव गुलाटी
संस्थापक सदस्य, पूर्व कोषाध्यक्ष,
पूर्व उपमंत्री, पूर्व प्रधान, नगर आर्यसमाज,
बुलन्दशहर (उ.प्र.)

अशुद्ध गणना से गलत ऋतुओं में मना रहे हैं त्योहार

सुमन कुमार वैदिक

हमारे देश में अनेक पंचांग प्रचलित हैं, जिनमें आपस में भिन्नता है। इसके बाद सभी पंचांगों में तिथि, मास, नक्षत्रों की गलत गणना के कारण हिन्दू गलत ऋतुओं और गलत तिथियों में अपना पर्व मना रहे हैं। आर्य लोग अनार्यों के पौराणिक पंचांगों के आधार पर संकल्प पाठ कर, पर्व मना रहे हैं। क्या आप इसे त्यागने को तैयार हैं?

पंचांग तिथि-पत्रक ही है, जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, माह, संवत् का ज्ञान होता है। आज के पंचांगों में बहुत कुछ है, किन्तु सत्य बहुत कम है। तिथि-पत्रक के न्यूनतम अंग 1. आयन (दक्षिणायन या उत्तरायण), 2. ऋतुएं (बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर) सौर तथा चन्द्रमास:- मधु (चैत्र), माघ (बैसाख), शुक्र (ज्येष्ठ), शुचि (आषाढ़), नमस् (श्रावण), नमस्य (भाद्र), इष (अश्विन), ऊर्ज (कार्तिक), सहस (मार्गशीर्ष), सहस्य (पौष), तप (माघ), तपस्य (फाल्गुन), 3. पक्ष (शुक्ल और कृष्ण) 4. तिथि (सूर्य उदय अस्त) 5. दिनमान (सोमवार.. ....) 6. नक्षत्र (28)

ये सब अनुमान से नहीं, गणितीय गणना से तथा भौतिक रूप से प्रत्यक्ष होते हैं। सौर मास से संक्रान्तियां होती हैं, जब दिनमान में परिवर्तन होता है, 22 दिसम्बर को 22 फरवरी, 22 जून, 23 सितम्बर आदि को स्पष्ट देखी जा सकती हैं। इसी प्रकार चन्द्रमासों में शुक्ल, कृष्ण पक्षों को चन्द्रमा की कलाओं के घटने-बढ़ने से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। 28 नक्षत्र अलग-अलग परिमाप के होते हैं। फलित ज्योतिषियों ने अपनी सुविधा के लिए इन्हें 27 मान लिया, क्योंकि 360 में इसका भाग हो जाता है, तथा प्रत्येक नक्षत्र इनके अनुसार 13 अंश 20 कला का होता है, जो पंचांगों का प्रमुख दोष है। राशियां भारत में नहीं थीं। यह काल्पनिक व्यवस्था है। इनका नक्षत्रों से कोई सम्बन्ध भी नहीं है। यह ग्रीक संस्कृति की देन है।

ज्योतिष की अवनति का प्रमुख कारण है आम जन में इसको जानने की इच्छा न होना। रोगी होने पर योग्यतम चिकित्सक ढूंढते हैं, झगड़े होने पर काबिल वकील करते हैं, किन्तु धार्मिक कर्मकाण्ड कराने के लिए सस्ता पण्डित ढूंढते हैं। हमारे पूर्वज ज्योतिष के जानकार रहे, किन्तु हम अपने बच्चों को इसके ज्ञान से वंचित रखते हैं। भारत वर्ष में दैनिक क्रियाकलापों में ज्योतिष का बड़ा महत्व था। यज्ञ से पूर्व संकल्प पाठ में तिथि संवत्सर इत्यादि पंचांग से ही देखकर आज भी किए जाते हैं। विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए मुहुर्त इत्यादि आज भी लगभग सभी लोग करते हैं। राजा, राष्ट्र-पुरोहितों के निर्देशों से कार्य करते थे। उस समय सौर मास प्रचलन में थे। तिथि नक्षत्र सटीक थे। सभी पर्व ऋतु अनुसार होते थे। विदेशी अक्रान्ताओं ने सोचा कि सबसे पहले ज्योतिष विद्या को गलत करा दिया जाए, जिससे इनके मुहुर्त गलत हो जायेंगे। राज्य ज्योतिषियों को पकड़कर सायन पंचांग के स्थान ५र निरयन पंचांग प्रचलन में ला दिया अर्थात सौर माह मधु, माधव के स्थान पर चन्द्र माह चैत्र, बैसाख प्रचलन में लाए गए। पंचांग गणना का कार्य अयोग्य अनाधिकारियों के पास जाने से इस विद्या की और अधिक दुर्दशा होती गई। आज तो ज्योतिषि वह बन रहा है, जो पढ़ाई में असफल हो जाता है। उसको पंचांग बांचने का कार्य करने का अधिकार मिल जाता है। वह ज्योतिष गणना को क्या जाने? अज्ञान, अंधविश्वास, रूढ़िवाद के चक्कर में वह समाज के प्रबुद्ध और धनी लोगों को छलता है। पंचांग की त्रुटियों पर न तो किसी की चिन्ता है, न मतलब। भारत के सभी पंचांग गत वर्ष के पंचांग के आधार पर गणना किए जा रहे हैं। जो विद्वान ज्योतिषी हैं, वे त्रुटियों को यह कह कर नहीं सुधार रहे कि हमने जो आज तक पंचांग दिया, अब कैसे कह दें वह गलत था। नव वर्ष का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से करते हैं, जब कि महीनों की पूर्णता पूर्णिमा के पश्चात्। 1 वर्ष में दो चैत्र के महीने 15-15 दिन के। इस प्रकार वर्ष में हमारे 13 माह होते हैं। प्रत्येक माह में एक संक्रान्ति होती है, जिससे ऋतु परिवर्तित होती है। जो अंग्रेजी तिथि 22-23 को पड़ती है। सभी पंचांग इसे मानते हैं, किन्तु मकर संक्रान्ति जो 23 दिसम्बर को होती है, जब से दिनमान बड़ा होने लगता है, जिसे उत्तरायण कहा जाता है, उस तिथि को न मनाकर 14 जनवरी को मनाते हैं। क्यों? इसका सही उत्तर कोई नहीं देता। जिस कारण हमारी सभी तिथियां 24 दिन पीछे हो गयी हैं। यदि हम इसको नहीं समझेंगे और नहीं सुधारेंगे, तो भविष्य में ऐसा भी समय आ सकता है कि सूर्य दक्षिण की ओर होगा और हम उत्तारायण समझ कर अपने पर्व मना रहे होंगे। ऐसा आज भी हो रहा है।

21 जून को दिनमान छोटा होने के साथ दक्षिणायन हो जाता है। इसके प्रारम्भ के साथ मानसून का आगमन अर्थात वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो जाती है। वर्षा ऋतु की पूर्णिमा गुरू पूर्णिमा हमने 31 जुलाई को इस वर्ष मनाई तथा हमारा दक्षिणायन का प्रारम्भ पंचांगों के अनुसार देवशयनी आषाढ़ी एकादशी अर्थात् 27 जुलाई से हुआ, जबकि यह 22 जून से भूगोल के अनुसार हो चुका था। इस प्रकार श्रावण का माह जो जुलाई के प्रारम्भ में होना था। हमने 31 जुलाई के बाद प्रारम्भ किया।

रक्षाबन्धन का पर्व, जो वर्षा ऋतु का पर्व है, वह हम शरद ऋतु में 29 अगस्त को मना रहे हैं। शरद ऋतु 23 अगस्त से प्रारम्भ हुई। वर्षा ऋतु का पर्व जन्माष्टमी भी शरद ऋतु में मना रहे हैं। दीपावली, जो शरद ऋतु का पर्व है, वह हेमन्त ऋतु में मनायेंगे। ऋतुओं का निर्माता सूर्य है, चन्द्रमा नहीं। अमावस्या और चन्द्र तिथियों को हम स्थूलता से जान सकते हैं, किन्तु वह किस ऋतु की है, यह ज्ञान संक्रान्तियों से होता है। आज हमारी सारी गणना ऋतुओं से हो नहीं हो रही हैं, जिस कारण सारे ही पंचांग गलत हैं। सही पंचांग आर्ष सिद्धान्तों तथा वेद के आधार पर आचार्य दार्शनीय लोकेश ने बनाया है।

पता :- ब-२७६ गामा प्रथम,
ग्रेटर नोयडा
फोन- 0120-4271410

स्वास्थ्य जगत : मुखपाक (Stomatitis)

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

मुख के भीतर छालों के पड़ जाने को अथवा व्रणों के बन जाने को मुखपाक कहते है। ये छाले जिह्वा के ऊपर, नीचे, कपोलों व ओष्ठों के अन्दर मसूड़ों पर कहीं भी हो सकते हैं।

मुखपाक निम्नलिखित कारणों से होता है। स्थानिक कारण-(क) अति तीक्ष्ण औषधियों यथा तीक्ष्ण अम्लीय या क्षारीय पदार्थों के तथा अत्यन्त उष्ण जलते-जलते पदार्थों को खाने से।

अत्यधिक गर्म पदार्थों के सेवन से मुंह जल जाता है, व्रण बन जाते है, कभी-कभी कंठ अन्न प्रणाली एवं अमाशय भी जल जाते है, वहां भी व्रण बन जाते है। यदि अम्ल या क्षार बहुत तीक्ष्ण और अधिक मात्रा में हों तब तो व्रण घोर अवस्था के अति विस्तृत एवं गहरे होते है ऐसे कई व्यक्ति मर भी जाते है तीव्रता और मात्रा अनुसार व्रण बहुत या थोड़े साधारण या विस्तृत होते है। अम्ल की अवस्था में तत्काल मृदु क्षारीय विलयन से यथा मधुर क्षार के गरारे करावें। क्षारीय पदार्थों के लिए मृदु अम्ल के विलयन या सिरका में तीन भाग पानी मिला कर या 25-30 ग्राम जल में 1 ग्राम बोरिक एसिड के विलयन के गरारे कराएं। यदि अमाशय में व्रण हो गए हो तो इन चीजों को पिलाने को भी दे सकते हैं।

(ख) दन्तपूय दन्त कृमि से तथा कभी-कभी गल ग्रन्थि शोथ एवं कंठ शोथ से भी मुखपाक हो जाता है। इन रोगों में 'स्ट्रेप्टोकाक्स' रोगाणु ही उत्पादक का कारण होता है। सामान्य चिकित्सा से कुछ काल के लिए छाले मिट जाते है। परन्तु कारण के उपस्थित रहने के कारण पुन:-पुन: उपस्थित हो जाते है। सर्वदा के लिए यह छाले मिट जाएं पुन: न हों .... गल ग्रन्थि शोथ जो भी कारण है उसको दूर करना जरूरी है।

2. रोगाणु जन्य मुखपाक:-(क) किसी भी तीव्र संक्रामिक ज्वर में अथवा उसकी निवृति के तत्काल बाद अर्थात् पुपूषु अवस्था में ओष्ठों पर तथा कभी-कभी मुख में छाले हो जाते है। यदि जरूरत पड़े तो सामान्य चिकित्सा का जिसका वर्णन आगे आयेगा प्रतिपालन करना चाहिए।

(ख) निम्नोक्त संक्रामिक रोगों में भी मुखपाक कभी-कभी हो जाता है यथा:-रोहिणी, उपदंशकी दूसरी अवस्था में कभी-कभी तीसरी अवस्था में भी, विन्सेंन्ट रोगाणु इनके अतिरिक्त अनेक प्रकार के वाईरस।

(ग) विशेष प्रकार का मुखपाक कभी-कभी हो जाता है जो अत्यन्त क्षीण, हतशक्ति व्यक्तियों को होता है। विशेष कर बालकों में इसमें जिह्वा, तालु एवं दन्तवेष्टों के अन्दर श्वेत रंग के विस्तृत छाले हो जाते है मुंह से लाल स्राव होता रहता है।

(घ) राजयक्ष्मा आदि क्षीणकारी रोगों से पीड़ित अति तीक्ष्ण, हतशक्ति व्यक्तियों में कदाचित गाल के अन्दर की ओर व्रण उत्पन्न होकर शीघ्र गहरा हो जाता है। उस स्थान की धातु मरकर वहां कोथ हो जाता है। गाल का वह भाग गल-गल कर गिर जाता है, वहां छेद सा हो जाता है। ऐसे व्रण कदाचित रोमान्तिका के बाद क्षीण बालकों में भी हो जाते है, कदाचित टाईफाइड में या इसके बाद क्षीण बालको में भी हो जाते है। श्वेताणु न्यूनता में भी होते है। दो चार दिन की सामान्य चिकित्सा से आराम की प्रवृति न दिखे तो अग्निदाह या बिजलीदाह द्वारा चिकित्सा करें या शल्य क्रिया द्वारा मृत भाग को निकाल देना चाहिए।

(घ) विटामिन अभाव जन्य रोगो में भी मुखपाक हो जाता है।

1. विटामिन बी2 के अभाव में मुख के अन्दर तथा बाहर विशेषकर ओष्ठों के दोनों कोनों पर चीर समान व्रण हो जाते है। व चिरस्थायी होते है। बी2 के प्रयोग के बिना नहीं जाते।

2. बी6 के अभाव जन्य रोग पैलेगरा में।

3. बी2के अभाव में बेरी-बेरी में।

4. सी से स्कर्वी रोग।

5. दुष्ट विलोहिता, श्वेतातिसार, जीर्ण प्रवाहिका, जीर्ण अतिसार संग्रहणी में, मुख में छाले पड़ जाते है। वस्तुत: इन में विटामिनों का ही अभाव हीकारण बनता है। विशेष रूप से बी2 और बी6।

रक्त रोगों में यथा श्वेताणु वृद्धि, रक्त पित्त, लासिका समूह वृद्धि में:-

1. उन रोगों में जिनमें त्वक पर छाले पड़ते है उनमें भी मुखके भीतर छाले पड़ने की संभावना होती है।

2. अत्यधिक धूम्रपान, तीक्ष्ण आचार, मसालेदार खुराक तथा दुष्पाच्य आहार के निरन्तर सेवन से उत्पन्न अजीर्ण तथा अमाशय गत रोगों में मुखपाक कभी-कभी जाया करता है।

3. मुख के अर्बुद विशेषकर दुष्ट अर्बुदों में भी मुख में व्रण हो जाते है।

4. दूध पीते बच्चों में जो बाहर के दूध या कृत्रिम आहार पर पलते हैं, दूध या पिलाने के उपकरणों के शुद्ध न रखने पर, कृमि मुख में जाकर छाले उत्पन्न कर देते है। यह छाले सदा भीषण होते है। सारी जिह्वा छालों से भरकर सफेद हो जाती है। बालक दूध तक नहीं पी सकता। इसको श्वेत मुखपाक कहते है।

5. कच्चे पारद तथा कच्ची धातुओं के कई दिनों तक के सेवन से जिह्वा फूल जाती है, मसूड़े थोथ युक्त व रक्तमय हो जाते है। उन पर व्रण से हो जाते है। (क्रमश:)

योगस्थली, महेन्द्र गढ़
(हरियाणा)
मोबा. : 9416133594

सनातन भारतीय व्यवस्था और हम

डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली

महाभारत युद्ध में सभी राजवशं समाप्त हो गए तब संघ राज्य या गणराज्य बने। देश भर में संघ राज्य स्थापित हुए। कलियुग प्रारम्भ हो चुका था। 'संघेशक्तिः कलौयुगे' कहावत चल पड़ी। गणतंत्र व्यवस्था का आदर्श वैशाली माना गया जिसमें आठ गण सम्मिलित थे। गणतंत्र का आधार गणना था। गणना करते समय प्रथम का स्थान कनिष्ठिका अंगुली होती है। दूसरी अंगुली अनामिका होती है जिस पर किसी का नाम नहीं आ सकता। इसका तात्पर्य यह हुआ कि जिस व्यवस्था में सब प्रथम हो, गण्य हों, मान्य हों उसी को गणतंत्र कहा जाता है। उसमें कोई द्वितीय श्रेणी का नागरिक नहीं होता।

गणसभा में बैठने वाले गण्य होने के साथ सभ्य भी होते थेः-स-भा (प्रकाश युक्त) में बैठने की योग्यता से सम्पन्न सभ्य। महर्षि वेद व्यास ने कहा थाः-

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः, वृद्धाः न ते ये न प्रवदन्ति धर्मम्। वह सभा सभा नहीं होती जिसमें ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध, अनुभववृद्ध न हो और वृद्ध भी वे नहीं जो धर्म की बात न करें-धर्म प्रवचन न करें। गणसभा ही धर्मसभा भी इसी कारण कहा जाता था। वैशाली की गणसभा में 7777 सभ्य बैठकर सर्व सम्मति से निर्णय करते थे। विरोध का एक भी स्वर हो तो निर्णय रूक जाता था।

महात्मा बुद्ध से पूछा कि क्या वैशाली कभी नष्ट हो सकती है? तब महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया कि जब तक वैशाली की धर्मसभा (गणसभा) में सभ्य लोग सर्वसम्मति से धर्मयुक्त निर्णय लेते रहेंगे तब तक वैशाली को परास्त नहीं कर सकता। उसके शत्रु हैः- आपसी वैमनस्य (फूट) अग्निदाह और जलप्रवाह। वैशाली गंगा के तट पर था और गंगा पार उस समय के सबसे बड़े साम्राज्य मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। वैशाली के अतिरथी मल्ल बन्धुल से मगध की सेना डरती थीं, क्योंकि वह 500 रथारोहियों का एक साथ सामना कर सकता था। महाली बन्धुल से भी अधिक कुशल सेनापति था।

मथुरा का माथुर गणराज्य भी अष्टकुलिक था-वृष्णि, अन्धक, कुन्तिभोज आदि आठ गण उसमें सम्मिलित थे। श्रीकृष्ण के नाना उग्रसेन उसके गण प्रमुख (विनयधर) थे। उग्रसेन के बेटे कंस ने गण व्यवस्था को नष्ट करने की कोशिश की। श्री कृष्ण ने उसके मंसूबे पूरे नहीं होने दिए। अपने मामा कंस को मारकर उसके अत्याचारों से गणराज्य को मुक्त किया। उग्रसेन को पुनः गण प्रमुख बनाया।

गणराजय दो प्रकार के होते है-राजशब्दोपजीवी गण और आखेट जीवी गण। भील, कौल, संथालों के गण आखेट जीवी थे। जबकि आमीर, जर्त, क्षुद्रक, स्त्री, वैश्य आदि गण राजशब्दोपजीवी थे। महाभारत में भीष्म पितामह ने गण व्यवस्था की प्रशंसा की है, किन्तु इसकी सबसे बड़ी कमी बताई है-इसमें मंत्ररक्षा (गोपनीयता) नहीं होती है। चाणक्य गण विरोधी थे। उन्होंने कई गणतंत्रों को इसी कमी के आधार बनाकर भंग कर दिया और यौधिष्ठिरी व्यवस्था का आदर्श लेकर चन्द्रगुप्त के मौर्य साम्राज्य की व्यवस्था की। गण व्यवस्था की अच्छाइयों को देखकर भगवान बुद्ध और महावीर ने आध्यात्मिक संघों का संगठन किया-'संघ शरणं गच्छामि' का नाश कर दिया। अनेक ऐसे संघ भी बने। मत और सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ। सबका उददेश्य था-आदर्श मनुष्य का विकास और आदर्श मानवी व्यवस्था। जीवन से पलायन के अतिरिक्त सब कुछ अच्छा ही था। पलायनवादी दृष्टि ने सामाजिक जीवन में नकारात्मकता और निकम्मापन को जन्म दिया। इसको भारत गणतंत्र में आज भी देखा जा सकता है। हमने अपने गणतंत्र को अपनी परम्परा से ग्रहण नहीं किया है। परिश्रम से लिया है। डेमोक्रेसी को जनतंत्र, लोकतंत्र और प्रजातंत्र तो कह दिया पर अपनी भाषा के शब्दों को न समझा और सार्थक किया।

प्र-ज का अर्थ-प्रकृष्ट जन्मा, उत्कृष्ट जन्मा। प्रज का बहुवचन प्रजा होती है। उसका तंत्र प्रजातंत्र कहा जायेगा। प्रजा के बिना प्रजातंत्र कैसा? लोक का अर्थ है अवलोकन करने वाला। लोक से अतिचारी और अत्याचारी डरते थे। आज भी कहा जाता है कि लोग क्या कहेंगे? लोक की शक्ति के विषय में वाग्मय का कथन है कि- आचार्यः सर्वचेष्टासु लोक एव हि धीमतः। (अष्टांगहृदय) अर्थात ये बुद्धिमानों! हमारी सारी चेष्टाओं का आचार्य लोक है। वह लोक देखता होता तो देश में इतने बड़े-बड़े घोटाले कैसे होते?

भारत में जनतंत्र भी नहीं है। जन हो तो उनका तंत्र जनतंत्र होगा। वेद का वचन है-मनुर्भव जनया दैव्यजनम्। मनु बनो तो दिव्य जन को उत्पन्न करोगे। मनु का बेटा होता है मानव या मनुष्य। मनु बन जाओ तो श्रेष्ठ मनुष्य-श्रेष्ठजन बन सकोगे। यह जनन क्षमता जन बनाती है-दो टांगों के प्राणी को। मानवी माता से पैदा हुए मनुष्य ने जनसंख्या तो बढ़ाई है जिससे अभाव का दौर चल पड़ा है। ज्ञान का अभाव, साधनों का अभाव, सुरक्षा का अभाव, सुविधाओं का अभाव। सुविधाएं छीनने के लिए गलकाट लगी हुई है-यह कैसा तंत्र है?

डेमोक्रेसी का विचार उधार लिया तो उसे समझा-डेमोस-क्रेसी (कृषि) अर्थात घर की खेती। नेताओं ने घर की खेती समझकर देश को खूब चरा और चरने से अधिक तो बिखेरा। दुःखों के पहाड़ खड़े कर दिए।

चाणक्य ने कहा-सुख्स्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलमर्थः, अर्थस्य मूलं राज्यं, राज्यस्य मूलम् इन्द्रिय जयः। सुविधाओं की लूट करने वाले लुटेरे इन्द्रिय जय का पाठ पढ़ने से रहे। उनकी दुर्विनीतता और दम्भ ने राजनीति को गन्दी नाली बना दिया है।

राजनीति का अर्थ है-प्रकाशमान होने की नीति। राजनीति को अपना कर व्यक्ति राष्ट्र बनता है। वह और उस जैसे और जहां रहते हैं वह क्षेत्र भी राष्ट्र बनता है। राष्ट्र का अर्थ है-अतिशय, चमक, द्युति, प्रकाश। इस विषय में तो लोगों ने सोचना ही बन्द कर दिया है। यह तो मानकर चलना चाहिए कि जन बनना है या लोक बनना है या प्र-ज बनना है अथवा गणमान्य बनना है-यह निश्चिय तो मतदाता को ही करना होगा। निश्चिय ही नहीं करना होगा, बनना भी होगा। जो भी बनेंगे वैसा ही तंत्र बनेगा। कह देने मात्र से न जनतंत्र बनता है, न लोकतंत्र, न प्रजातंत्र, और न गणतंत्र। मानव बनने के लिए मानवता का संविधान वेद है उसी तरह भारतीय नागरिक बनने के लिए भारतका संविधान है, 125 करोड़ भारतीयों का एकीभूत संकल्प। जब राष्ट्रीय जीवन में कोई समस्या पैदा होती है तब संविधान को टटोल कर उसमें से समाधान कब निकालते हैं कोई। एक चिन्तक ने कहा है-वी हैव रेड दि कान्स्टीटयूशन नोट रीड दि कान्स्टीटयूशन। हमने संविधान को रखकर ताख में रख दिया। जरूरत के समय उसकी याद नहीं आती। उसमें संशोधन के नाम पर थेगलियां अवश्य लगा दी। भारत में संविधान का शासन है-यह अभ्यास वश बोलते है- सोच समझ कर नहीं बोलते।

इस अल्हड़पन के कारण जीवन में निराशा, हताशा और नकारात्मकता पैदा हो गई है। हम निरूत्साही होकर अकर्मण्य हो गए हैं-निकम्मे बन गए है। करोड़ों युवक नौकरी की तलाश में दौड़ लगा रहे है। पूर्वजों ने माना था कि स्वतंत्रता ही परम सुख है-स्वातंत्र्यं परमं सुखम्। पर हम स्वतंत्रता की हवा में सांस नहीं लेना चाहते। यदि स्वतंत्र होते तो नौकर बनने की ललक क्यों होती? छुटभैये नेता युवकों के लिए नौकरियां पैदा करने के लिये घोषणा करते रहते है। देश को नौकरों का देश बनाना चाहते हैं या सुनागरिकों का? पुरूषार्थियों का देश बनाना चाहते है या विद्या, श्रम और ईमान बेचने वालों का? अविश्रमो हि अयं लोकतंत्राधिकारः-यह कालीदास ने कहा था-लोकतंत्र में कर्तव्य पथ पर कहीं विश्राम नहीं है। विश्राम भी विशेष श्रम का नाम होता है-यह सोच हमारे आधुनिक जीवन दर्शन से विलुप्त हो चुका है। महात्मा गांधी नेसुराज्य, स्वराज्य और रामराज्य की बात कही थी। स्वराज्य का अर्थ आत्मदीप्त राष्ट्र। आजादी अपनी भाषा हिन्दी से आयेगी-इस समझ से हमारा कोई सरोकार नहीं रहा। अपनी भाषा की अर्थ पद्धति और उसके संस्कार संपदा को छोड़कर हम दरिद्र हो गए है। अंग्रेज गए तो अंग्रेजी के गुलाम बन गए। अंग्रेजी के अर्थों को अपनी शब्दावली पर लाद कर हमने अपनी भाषा की हत्या कर दी। महात्मा गांधी की हत्या के बराबर ही यह जघन्य पाप हुआ है।

हिन्दी संस्कृत की पुत्री होने के कारण संसार की सबसे समृद्ध भाषा है। पर किसी सिर फिरे ने कह दिया कि हिन्दी में पारिभाषिक शब्द नहीं है। बस शब्दावली आयोग बन गया, भाषा आयोग बन गया। इन आयोगों ने देश को अंधेरे में ठेल दिया है। इस अंधेरे में देश को, समाज को कौन उबारेगा?

हमारी सनातन परम्परा ही कहती है-अपना उद्धार स्वयं करो, अपने आत्मा की अवमानना मत करो- **उद्धरेद आत्मनात्मरनं नात्मानम अवसादयेत्।**

हमारा लक्ष्य रहा-आत्मानं विद्धि। स्वयं को पहचानो और अपने पैरों पर खड़े हो जाओ। वेद की उक्ति है-उदयानं ते नावयानम्-हे पुरूष तू केवल उन्नति के लिए बना है-नीचे गिरने के लिए नहीं। उन्नति का मार्ग खोजो और उस पर बढ़ चलो।

बीच, दाता नगर, रेम्बल रोड, अजमेर-३०५००१

अंधेरे में जो बैठे हैं, उन पर भी कुछ नज़र ड़ालो

भारत में आर्य समाजों की कई संस्थाओं द्वारा पारितोषिक समय-समय पर दिये जाते है। भारत नेपाल के परिक्रमावासी स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती ने 1963 से 2013 तक निरन्तर 50 वर्ष साईकिल, मोटर साईकिल, रेल, बस तथा पैदल या जहां जो भी साधन मिला, यात्रा की। अब भी 90 वर्ष की उम्र में रेल-बस की यात्रा चल ही रही है। एक किलोमीटर तक 15 किलो वजन उठाकर तथा 5 किलोमीटर पद यात्रा करते है। स्वास्थ्य एक दम से ठीक है। अभी तक किसी भी प्रकार से बीमार नहीं हुए। एकदम निर्व्यसनी, चाय कॉफी नहीं पीते, अन्य भी कोई व्यसन नहीं। यात्रा, यात्रा, यात्रा निरन्तर चल रही है। यह यात्रा कहां, कब, क्यों, कैसे समाप्त हो जाए, कहा नहीं जा सकता। सीधी सलाह देते हैं कि यात्रा बन्द करके एक स्थान पर ही रहो, पर कोई यह नहीं कहता कि यहां बैठो।

तो क्या पुरस्कार देने वाले इधर जो स्वामी प्रवासानन्द जी सरस्वती के लिए फिक्स डिपोजिट के रूप में भारतीय स्टेट बैंक, ऑन-लाइन खाता नं. 310, 601, 697, 94, तीन सौ दस, छः सौ एक, छः सौ सत्यानवे, चौरानवे में एक हजार रूपये कम से कम कोई भी आर्यजन, आर्य समाज, आर्य संस्था या पुरस्कार प्रदाता पूरी रकम इसमें जमा करें। वरिष्ठ नागरिक स्वामी जी को 9 प्रतिशत ब्याज मिल रहा है। मासिक 744/-रूपये, एक लाख की एफ.डी. पर, इस तरह से जितने लाख की एफ.डी. होगी उतना ही ब्याज मिलेगा। जिससे यात्रा कई स्थानों पर रूक-रूक कर न करके, रेल से रिजर्वेशन से ही जाते-आते आराम से होती रहेगी। जब तक जीवन है। स्वामी जी, भूमिगत स्वतंत्रता सेनानी, इन्द्रा गांधी के समय भी आपातकाल में भूमिगत रहे, आर्यसमाज के हिन्दी, गौ रक्षा सत्याग्रही रहे। अपने गृहस्थ जीवन में संतानोंको गुरूकुल में पढ़ाया। अर्न्तजातीय विवाह भी किये, जो अब तीन पीढ़ी में है। पर संन्यासी घर का नहीं, संसार का है, यह जिंदगी वैदिक धर्म प्रचार के लिए ही है प्रेम से श्रेय मार्ग की ओर। स्वामी जी की स्मृति में, उनके न रहने पर एक समिति उनके कामों को करती रहेगी, आर्यजनों की। खाते में जमा रकम की सूचना उपरोक्त पते पर अवश्य दें। धन्यवाद के लिए पते सहित।

पता है-
स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
आर्यसमाज, नई सड़क
उज्जैन, मध्य प्रदेश
पिन-४५६००१
प्रस्तुतिः- मनीश शर्मा, अजमेर (राजस्थान)

हमारे नये आजीवन सदस्य

श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
सहारनपुर (उ.प्र.)

श्री अतर सिंह आर्य
बिजनौर (उ.प्र.)

श्री राजेश कुमार आर्य
सवाई माधोपुर (राजस्थान)

डॉ. राखी/श्री सुनील राजपूत
नोएडा (उ.प्र.)

आर्यावर्त केसरी के आजीवन व संरक्षक सदस्य बनें

आदरणीय बन्धुओं! सप्रेम अभिवादन,

आर्यावर्त केसरी आपका अपना पत्र है, जो विश्वभर में वैदिक संस्कृति, राष्ट्रीय चिन्तन व आर्यत्व के प्रचार-प्रसार के लिए संकल्पबद्ध है। आर्यावर्त केसरी की संरक्षक सदस्यता सहयोग राशि रु० 3100/- तथा आजीवन सदस्यता हेतु सहयोग राशि रु० 1100/- है। कृपया अपनी सदस्यता सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता सं० 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अपने पासपोर्ट साइज़ फोटो, नाम, पते व चलभाष सहित अविलम्ब हमें भेज दें। सहयोग राशि एकाउन्टपेयी चैक या धनादेश द्वारा भी भेजी जा सकती है। सभी मान्य संरक्षक सदस्यों व आजीवन सदस्यों के रंगीन चित्र व शुभ नाम प्रकाशित किये जाएंगे। इस प्रकाशन यज्ञ में आपकी सहयोग रूपी आहुति प्रार्थनीय है। धन्यवाद,

डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), दूर. -05922-262033, चल.- 09758833783 / 08273236003

आइये! आज ही आर्यावर्त केसरी के मिशन से जुड़िए...

आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन ६ को

अर्जुनदेव चड्ढा
नई दिल्ली।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्देशन तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 12वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 में सम्पन्न होगा।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा (चलभाष : 09414187428) के अनुसार अब तक हुए 11 आर्य परिवार सम्मेलनों के अच्छें परिणाम आये हैं, जिनमें अब तक 450 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। समिति ने आर्य परिवारों से अपने विवाह योग्य हो चुके पुत्र-पुत्रियों एवं संबन्धियों का पंजीकरण कराने की अपील की है। पंजीकरण की अंतिम तिथि 20 नवम्बर है।

रजिस्ट्रेशन फार्म सभा की वेबसाइट www.thearyasamaj.org से भी डाउनलोड किया जा सकता है। सम्मेलन स्थल पर तत्काल पंजीकरण की भी सुविधा उपलब्ध होगी।

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

सपत्नीक श्री अतर सिंह आर्य
बिजनौर (उ.प्र.)
राशि- ११००/- रुपये

श्री विजय मुनि
रामगढ़वा (झारखण्ड)
राशि- ११००/- रुपये

श्री सन्तोष आर्य
जालना (महाराष्ट्र)
राशि- ११०००/- रुपये

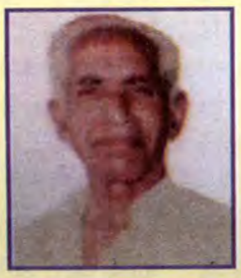
श्री तेजपाल सिंह आर्य
रुढ़की (हरिद्वार)
राशि- ११००/- रुपये

विशेष : न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश

धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

भरपूर ताकत के लिए सदा प्रयोग करें मुग़ल-ए-आज़म कैप्सूल व क्रीम। हर मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध है या डाक द्वारा मंगाएं।

निल स्पर्म रोगी व बेऔलाद अवश्य मिलें

हाशमी दवाखाना, अमरोहा (उ.प्र.)

मोबा. नं०- 09997161320, 09997161317

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, अमित कुमार, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033, 9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com

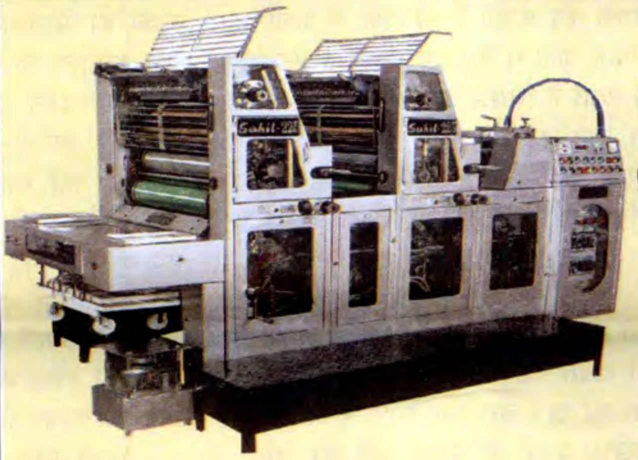

आर्यावर्त प्रिन्टर्स

रुपये 225 में 1000 कलर्ड विज़िटिंग कार्ड

नोट : आप हमें अपने कार्ड का डिज़ाइन ई-मेल भी कर सकते हैं।

हर प्रकार के मल्टी कलर्ड पोस्टर, पैम्फलेट, हैण्डबिल, किताब, ट्रैक्ट, कैलेण्डर, समाचार पत्र व पत्रिका, स्टीकर, बिल बुक, कलर प्रोस्पैक्टस, कॉलेज मैग्ज़ीन, स्कूल डायरी, रिपोर्ट बुक, फीस कार्ड, फीस रसीद, रिजल्ट कार्ड, कलर्ड लैटर हैड, लिफाफे, कलर्ड कार्ड आदि के लिए सम्पर्क करें-

आर्यावर्त प्रिंटर्स

सौम्या सदन, गोकुल विहार, निकट श्रीराम पब्लिक इ. कालेज, अमरोहा-244221
Ph. : 05922-262033, 08273236003, 09412139333
e-mail : aryawartkesari@gmail.com